भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 6 | अंक 06 | उदयपुर गुरूवार 01 अप्रेल 2021 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

भंवर म्हानैं खेलण दो गणगौर

डॉ. महेन्द्र भानावत

ऋतुराज बसन्त के आगमन के पश्चात त्यौहारों का प्राय: तांता सा लग जाता है। जन-जीवन में आनंद, उत्साह एवं उल्लास उमड़ पड़ता है।

रंगीले चंग की चलत, गैर की 'धन्त्यो पतड़', डांडिया और गींदड़ के 'भाई-भाई रे गैर्या', औरतों के 'कोई हाथ कांकण माथे बोर ए रायां की होली', बालिकाओं का लूर तथा 'फागण रा दन चार होली वेगी आवजे'; रंग की पिचकारियों, गुलाल की गुलालों, पटाखों की पट-पट तथा फूलझड़ियों की सर-सर- सूं के साथ फाल्गुन शुक्ला तृतीया को गणगौर का उत्सव राजस्थान, मालवा, गुजरात, महाराष्ट्र, हरियाणा, उत्तरप्रदेश तथा जहां-जहां प्रवासी राजस्थानी बसे हुए हैं, वहां-वहां बड़े उत्साह, उमंग और निष्ठा के साथ मर्यादापूर्वक मनाया जाता है।

होलिका दहन के पश्चात शीतला पूजन के बाद टीलों से बालू-मिट्टी तथा कुम्भकार के वहां से चिकनी मिट्टी लाकर ईसर, कानी, मालण आदि की प्रतिमाएं बनाई जाती हैं।

जवारों के रूप में जौ बो दिये जाते हैं तथा चैत्र बदी एकम से चैत्र शुक्ला तृतीया तक गौर-पूजा की जाती है। इस अवसर पर राजस्थान में जगह-जगह मेले भरते हैं।

कन्याएं ईसर (महादेव) और गौरी (पार्वती) से मनवान्छित वर प्राप्त करने की कामनास्वरूप प्रात: उठते ही अपनी-अपनी टोलियां बना कर वन में जाती हैं और लोटे में दुर्बा-फूल सजाकर गौरीपूजा तथा वर-कामना के विविध गीत गाती हुई लौटती हैं।

कला समय से साभार

समझा जाता है। सधवा स्त्रियां गीतों की गमक के साथ-

यां ही रहो उगन्ता सूरज यांही रहो जी
थाने रस्ते में होसी गणगौर म्हारा हंजामारू यां ही रहो जी।

गाकर अपने प्रियतम के साथ रहने की अर्ज करती हैं और गौर का विनोरा निकालती हैं। साथ ही अपनी साथिन-सहेलियों के विविध अंगों की जैसे झड़ी ही लग जाती। इसी प्रकार अन्य गीतों में भी हमें यही बात देखने को मिलती है-

लाड़ी भुवा ने चूनड़ली रो चाव
चूनड़ ओढ़े बड़े ये साजन की धीय।
लेओ लेओजी नणदबाई रा वीर
लेओजी हजारी ढोला झुमकड़ो।
म्हारे बयां ने बाजूबन्द ल्यावो रसिया
ग्हेरोजी फूल गुलाब रो।
म्हांरी आंखड़ली फरूके छै
घर आवो रंग रसिया
ग्हेरोजी फूल गुलाब रो।

गणगौर के दिन प्रियतमा अपने प्रियतम से कह बैठती है-

आज तो रंगीली गणगौर हो मेवाड़ा राजा
आज तो रसीली गणगौर हो चित्तौड़ा राजा। आज तो.....
कसूमल पाग, केसर बीन बागा,
तुर्रा री छवि न्यारी हो मेवाड़ा राजा

अत: मुझे भी गणगौर खेलने जाने की आज्ञा दीजिये। मेरी सभी सहेलियां बाहर खड़ी मेरी प्रतीक्षा कर रही हैं।

खेलण दो गणगौर भंवर म्हाने खेलण दो गणगौर
होजी म्हारे गणगौरी रा दन च्यार
होजी मारू खेलण दो गणगौर।
होजी म्हारी सगीय नणद रा वीर

गणगौर

अगर राजस्थानी गोरियां 'गौर ए गणगौर माता खोल किंवाड़' गाती जा रही हो तो समझ लीजिये फाल्गुन शुक्ला तृतीया है और सुन्दरियां गणगौर का पूजन करने जा रही हैं। यह त्यौहार सन्दरियों का 'सिन्दूर' सौभाग्यकांक्षिणियों का 'सौभाग्य', सतियों का 'सतीत्व', वराकांक्षिणी कुमारिकाओं की श्रेष्ठ पति की प्राप्ति की 'आश' एवं सधवाओं के पति चिरायु का 'विश्वास' बनकर आता है। इसे राजस्थानी गणगौरें बड़े उत्साह, उमंग एवं निष्ठा के साथ मर्यादापूर्वक मनाती हैं। पूजा-पाठ करती हैं और विविध प्रकार के नृत्य-गीतों के साथ अपना मनोरंजन करती हैं।

कन्याएं ईसर (महादेव) और गौरी (पार्वती) से मनवांछित वर प्राप्त करने की कामना स्वरूप प्रात: उठते ही अपनी-अपनी टोलियां बनाकर वन में जाती हैं और लोटे में दुर्बा और फूल सजाकर गौरी-पूजा तथा वर- कामना के विविध गीत गाती हुई लौटती हैं।

संध्या को महिलाएं घूमर-नृत्य के साथ 'काले रंग चून्दड़ी ला दे रे बालमवा', 'बादीला म्हारे गजरो लादोसा', 'लाइदो रसिया जोधपुरी', 'म्हारी घूमर छे नखराली ए मां', 'भर लाओ पाणी सागर रो', 'रगड़-रगड़ पग धोवती ओ रसिया' जैसे घूमर गीतों के साथ हर्ष, आनन्द, उल्लास, विनोद तथा मौज के साथ यह त्यौहार मनाती हैं।

गणगौर के दिन संध्या को औरतें समूह रूप में सजधज कर रावले (महल) रानीजी के दर्शन करने जाती हैं। रानीजी के सुन्दर वस्त्राभूषण देखकर वे भी अपने प्रियतम से 'माथा ने मेमेद, रखड़ी रे रतन, काना रे झालज, जूटणा रे जोल, मुखड़ा रे वेसर, टीलड़ी रे जरद, हिवड़ा रे हांस, तमण्या रे पाट, बायां रे चूड़लो, हाथां रे हथफूल, गजरा रे मजरा, कड्यां रे कसूमल, केसर्या रे कोर, पगल्या रे पायल, घुघरा रे घमच, अंगोठा रे अणवट तथा बिछिया रे डांडी' दिलाने की विनती करती है।

ऐसी रंगीली रसीली और छैलछबीली गणगौर पर प्रियतम की आज्ञा से 'भंवर म्हाने खेलण दो गणगौर' कहकर अपनी सखी-सहेलियों के साथ नवयुवतियां 'बादल महल', 'हरिया बाग' तथा 'मोती महल' में गणगौर खेलने जाती हैं।

सौभाग्य एवं सुहाग का प्रतीक चूड़ा तथा चूनड़ पहनना इस दिन आवश्यक समझा जाता है। संध्या को औरतें अपने-अपने पाड़े की गणगौर तथा ईसर अपने सिर पर रखकर समूह रूप में निकल जाती हैं और सभी गणगौरें एक जगह लाकर पंक्ति रूप में रख दी जाती हैं।

वहां एक बड़ा भारी-सा मेला लग जाता है। कहीं-कहीं इनकी आपसी दौड़ भी होती है। सिर पर गणगौर लिए जो औरतें सबसे आगे दौड़ में निकल जाती हैं उन्हें पुरस्कार भी दिया जाता है।

हम देखते हैं कि सरोवर की पाल पर गणगौर की मूर्तियां रखकर सम्भ्रांत नारियां तथा कुंवारी कन्याएं सौभाग्य और मंगल के गीत गाती हैं, नृत्य करती हैं और हर्ष, उल्लास की नई उमंगों में डूबती इतराती संध्या के धूमिल वातावरण में खो जाती हैं।

- धर्मयुग, 19 मार्च 1961 से साभार

संध्या को महिलाएं घूमर नृत्य के साथ फूली नहीं समाती हैं। अपनी सखी-सहेलियों को चाहे सवा मण रोली भी क्यों न बांटनी पड़े, वे तो ईसर जैसे वर को ही अपना भरतार बनायेंगी, जैसी मनोकांक्षा स्वाभाविक रूप में उनके कल-कंठों से निकल पड़ती हैं। यथा-

हां ओ बाप जी ईसर वर ने भलाई वरां
सवामण रोली सैंया ने बांटस्यां।

इस त्यौहार पर चूड़ा और चूनड़ी पहनना अत्यन्त आवश्यक को भोजन के लिए आमंत्रित करती हैं।

संध्या को औरतें अच्छे वस्त्राभूषणों से सजधज कर गीत गाती हुई समूह रूप में रावले (महल) में रानीजी के दर्शन करने जाती हैं। रानीजी के कीमती वस्त्राभूषण देख कर जब वे अपने घर लौटती तो अपने प्रियतम से उसी अनुरूप वस्त्र एवं आभूषण लाने की मांग करतीं।

बात और बोली बिना गीत-माध्यम से जिस खूबी से अभिव्यक्ति होती वह इस पंक्ति में देखिये और फिर पूरे शरीर

गाढ़ा मारू खेलण दो गणगौर।
होजी म्हाने गणगौर्यां रो चाव
साजन म्हाने पूजण दो गणगौर।

अपनी सखी-सहेलियों के साथ प्रियतम की आज्ञा की इंतजार कर ही रही थीं कि प्रियतम घर-बाहर का इशारा कर निकल गया।

- शेष पृष्ठ सात पर

उदयपुर की स्मृतियां लिए कीर्ति राणा (1)

उदयपुर में वर्ष 2006 से करीब ढाई वर्ष दैनिक भास्कर के कार्यकारी सम्पादक रहते कीर्ति राणा ने बड़ी लोकप्रियता अर्जत की। उन्होंने पाठकोपयोगी नये कॉलम शुरू किये। ठेठ ग्रामीण अंचलों तक भास्कर की पैठ बनी। पाठक संख्या बढ़ी और अब जब वे यहां नहीं हैं, इन्दौर में दैनिक प्रजातंत्र का सम्पादन कर रहे हैं तब भी न वे उदयपुर को भूल पा रहे हैं और न उदयपुर ही उन्हें विस्मृत कर पा रहा है। इन्दौर में इन दिनों कीर्ति राणा 'मेरी पत्रकारिता' नाम से धारावाहिक किश्तें लिख रहे हैं। उनमें 21वीं से 31वीं किश्त उन्होंने उदयपुर के नाम लिखी है। इन किश्तों के चुनिन्दा अंश हम साभार शब्द रंजन के पाठकों को सुलभ करा रहे हैं। - सं.

उज्जैन से चल पड़े अंजाने शहर उदयपुर :

यह तय हो गया था कि अब उज्जैन से उदयपुर जाना है। उज्जैन आया था तब महाकाल के यहां ज्वाइनिंग देते वक्त कामना की थी प्रभु मुझे सिंहस्थ तक अपने पास रखना, फिर आप जहां चाहें वहां भेज देना। इसलिए उदयपुर के आदेश का ना मुझे गम था ना ही खुशी।

हां उदयपुर जाने से पहले मैंने मां, पत्नी-बच्चों के साथ महाकाल का पूजन और आभार अभिषेक कर उनके प्रति आभार भाव जरूर व्यक्त किया। उज्जैन के बाद जिस भी शहर में रहा, श्रावण मास पर निकलने वाली महाकाल की सवारी या शाही सवारी में एकबार अपनी हाजिरी लगाने जरूर आता रहा। सवारी में शामिल होने के लिए तत्कालीन पीआरओ चंदर सोनाने, पंकज मित्तल और उनके सहयोगी एचएस शर्मा और खासकर संतोष उज्जैनिया का सहयोग खूब मिला।

उज्जैन के तत्कालीन कमिश्नर (स्व.) सीपी अरोरा को हर सवारी में नंगे पैर शामिल होते देख उनकी ही तरह मैं और निरुक्त भार्गव भी नंगे पैर शामिल होने लगे। कई बार तेज गर्मी से तपती सड़क का असर पैर के तलुवों पर भी पड़ता रहा लेकिन महाकाल की कृपा के चलते यह सब सामान्य लगा मुझे।

महाकाल ने एक बहन गिफ्ट में दे दी :

उज्जैन स्टॉफ ने विदाई समारोह रखा। भाई साहब सहित स्टॉफ के साथियों ने खूब प्रशंसा की। वैसे भी भारतीय संस्कार ऐसे हैं कि हम संस्थान और संसार से किसी को विदा करते वक्त कहां बुराइयां गिनाते हैं। मैं तो महाकाल और उज्जैन स्टॉफ की कृपा ही मानता हूं कि करीब साढ़े चार साल टिक गया वरना तो (स्व.) शरद शिंदे, विपुल गुप्ता से लेकर नरेंद्रसिंह अकेला का उदाहरण देते हुए भास्कर विरोधी यह कहते रहते थे कि मेहताजी और उनके आदमी विवेक, अनूप, धीरेंद्र आदि किसी ब्यूरो चीफ को एक साल से ज्यादा टिकने ही नहीं देते।

चंद्रहास दुबे सर के पिताजी नहीं रहे :

इसी दौरान एक दिन ऑफिस आए एडीएम कार्यालय के बाबू (स्व.) महेश पुरी ने बातचीत के दौरान बताया कि अपर कलेक्टर चंद्रहास दुबे (मुन्ना भैया) के पिताजी का निधन हो गया है। वो यहीं राजस्व कॉलोनी में रहते हैं। चूंकि इंदौर में भू अर्जन अधिकारी रहने के वक्त से दुबेजी से मेरा परिचय था। मैंने पुरी से पूछा कहां है उनका मकान? बस इतना पूछना था कि पुरी बाबू हनुमान की मुद्रा में आ गए। बोले, मेरी गाड़ी से चलो भाईसाब, यहां से पास में ही है।

हम दुबेजी के राजस्व कॉलोनी वाले सरकारी बंगले पर पहुंचे, बैठे। औपचारिक बातचीत चली। पोहे का नाश्ता करते-करते पुरी ने कहा सर, राणाजी का ट्रांसफर उदयपुर हो गया है। दो-चार दिन में जाने वाले हैं। मुन्ना भैया ने, उदयपुर में अपना घर है चिंता मत करना, कहते हुए 'गुड्डी' इतनी जोर से पुकारा कि पड़ोस के कमरे तक सुनाई दे जाए।

'जी भैया' कहते हुए उनके समीप आकर खड़ी हुई महिला से उन्होंने कहा, गुड्डी ये कीर्ति राणा मेरे भाई हैं तो तुम्हारे भी भाई हुए। ये उदयपुर भास्कर में जा रहे हैं ट्रांसफर होकर, तुम वहां ध्यान रखना। अपने घर पर ही रहेंगे। जी भैया, कहते हुए वो अंदर चली गईं। मुन्ना भैया ने उनका नाम, फोन नंबर आदि लिखा दिया। पुरी ने मुझे वापस ऑफिस छोड़ दिया।

उदयपुर के लिए अशोका ट्रेवल्स की बस से ऑफिस ने टिकट बुक करा रखा था। जिस रात जाना था, बस पर स्टॉफ के और परिवार के लोग छोड़ने आए थे। सामान रखते हुए पता चला कि दीदी (स्मिता चतुर्वेदी) भी उसी बस से जा रही हैं। यह संयोग ही मानता हूं कि पराए शहर उदयपुर में महाकाल ने एक अपने घर-परिवार की व्यवस्था करादी।

सुबह उदयपुर के ठोकर चौराहे पर दीदी ने बस रुकवाई और कहा, भैया आप को भी यहीं उतरना है। मैं भी अटैची लेकर उनके साथ उतर तो गया लेकिन उस दिन से आज तक मन में यह प्रश्न उठता रहता है कि उस चौराहे को ठोकर चौराहा क्यों कहते हैं? (किवदंती है कि चौराहे के वहां पूर्व में ऊंची जमीन थी जहां से गुजरने वालों को अक्सर ठोकर लग जाया करती थी। कालान्तर में जब चौराहा बना तब यही नाम चर्चित हो गया। -**सं.**)

घर पहुंचे तो दीदी ने मेरे भांजे-भांजियों प्रभांशु, श्वेता, पंखुरी और जीजाजी अरुण चतुर्वेदी से परिचय कराया। बस परिचय के बाद तो हम दूध में शक्कर की तरह घुल-मिल गए। जीजाजी ही क्यों, पूरे परिवार का दबाव था कि आप तो यहीं रहो, ऑफिस (महासतियां) पास ही है। मैंने समझाया कि अभी सात दिन रहने की व्यवस्था (शायद) सागर इंटरनेशनल होटल महाराणा भूपालसिंह अस्पताल के सामने की है। वहीं रहूंगा। इस शर्त पर जीजाजी मुझे कार से छोड़कर आए कि भले ही वहां रहो लेकिन खाना यहीं खाना पड़ेगा।

बातों ही बातों में मैंने शहर के प्रमुख देवस्थान की जानकारी ली तो पता चला कि सर्वमान्य बोहरा गणेश का मंदिर तो अपनी इस कॉलोनी से पहले ही है, तो जब जीजाजी ऑफिस छोड़ने के लिए निकले तो अपन ने महाकाल की तरह बोहरा गणेशजी जाकर ज्वाइनिंग दे दी। बोहरा समाज के किसी व्यक्ति ने मंदिर स्थापित किया होगा।

मेरी यह गलतफहमी चतुर्वेदी परिवार ने ही दूर करते हुए बताया कि बोहरा से तात्पर्य शादी ब्याह में हिसाब किताब में परेशानी न आए, सब काम आराम से निपट जाए इसलिए जब गणेशजी को नौतने आते हैं तो मंदिर के पुजारी बरकत के रूप में सिक्का देते हैं इसलिए बोहरा गणेश नाम पड़ा है। (सच तो यह है कि बोहरा से तात्पर्य, उस व्यक्ति से है जो जरूरतमंदों को धन देकर शान्ति से उसका तमाम काम पूरा करते हैं। इसके लिए प्रसिद्धि है कि एकदिन पूर्व गणेशजी के सामने रकम प्राप्त करने की विनती की जाती है और दूसरे ही दिन वहां उसकी मनोकामना पूरी हो जाती है। ऐसे अनेक किस्से सुनने को मिलते हैं। वादे के अनुसार गणेशजी से उधार ली हुई रकम चुकानी होती है। -**सं.**)

संपादकीय माहौल वैसा नहीं लगा :

मेरा पहला दिन था ऑफिस में सुबह से दोपहर, लंच चतुर्वेदी परिवार में। दोपहर से रात यह रोज का क्रम रहा लेकिन इन सात दिनों में मुझे सम्पादकीय विभाग का माहौल वैसा नहीं लगा जैसा सुधीरजी ने जिक्र किया था। शायद उसकी एक वजह यह भी रही हो कि मेरी उपस्थिति को एमडी सर के जासूस के रूप में लेते हुए ऑफिस में सीजफायर की स्थिति बन गई हो।

सातवें दिन होटल में श्रवणजी का फोन आया, आपने रिपोर्ट बना ली क्या? कब भेजेंगे? मैंने पूछा, कौनसी रिपोर्ट? उन्होंने कहा सम्पादकीय स्टॉफ और सम्पादक के बीच जो कुछ चल रहा है उसकी रिपोर्ट। मैंने कहा, मुझे तो रिपोर्ट बनाने जैसा कुछ लगा नहीं। तो आपने रिपोर्ट नहीं बनाई, यह बता दूं सुधीरजी को? जी हां बता दीजिए। कुछ समय बाद उनका फिर फोन आया आप एक काम करिए उदयपुर से भोपाल आ जाइए, सुधीरजी बात करेंगे आप से। और मैं उदयपुर से बस में बैठकर भोपाल के लिए रवाना होगया।

सुधीरजी ने मेरी शर्त मानली :

उदयपुर भास्कर का सात दिन माहौल देखने के बाद मैं बस से चल पड़ा उज्जैन। वहां पहुंचा और भोपाल के लिए रवाना हो गया। श्रवणजी उन्हें बता ही चुके थे कि मैंने कोई रिपोर्ट नहीं बनाई है। सुधीरजी ने पूछा, कैसा माहौल है? मैंने कहा, मुझे तो ऐसा कुछ लगा नहीं। शिवकुमार विवेकजी और सम्पादकीय टीम में मुझे तो कोऑर्डिनेशन लगा। सुधीरजी का कहना था आप को पता नहीं है, हमारा अखबार डंप हो रहा है एडिटोरियल की इंटरनल पोलिटिक्स के कारण।

उदयपुर में हमारी आवाज खत्म हो चुकी है। सर्कुलेशन गिरता जा रहा है और आप कह रहे हैं एडिटोरियल टीम और सम्पादक में कोई मतभेद नहीं है। वो श्रवणजी की तरफ मुखातिब हुए और बोले, सुनिए क्या कह रहे हैं ये?

श्रवणजी कुछ बोलें इससे पहले ही सुधीरजी बोले, देखिए आपको वहां बहुत मेहनत करना पड़ेगी। इन सात दिनों में आपने एडिटोरियल स्टॉफ को तो समझ ही लिया होगा। आप एक काम करिए, उज्जैन भास्कर से या इंदौर भास्कर में आपके विश्वास के जो लोग हैं उन्हें उदयपुर ले जाइए और वहां जिनका भी परफार्मेंस आप को ठीक नहीं लगता है उनके नाम दे दीजिए। उन्हें अन्य एडिशन में शिफ्ट कर देंगे। यह ठीक रहेगा?

मैंने कहा, भाई साहब यदि मैं उज्जैन, इंदौर से स्टॉफ लेकर गया तो उदयपुर में फिर दो गुट वाले हालात बन जाएंगे। एक गुट सम्पादक के लोगों का, दूसरा गुट उदयपुर के पुराने स्टाफ का हो जाएगा। इससे तो स्थिति और बिगड़ेगी। मैं न उज्जैन से न इंदौर से किसी को ले जाऊंगा। वैसे भी उदयपुर का स्टॉफ बेहतर है उन्हीं के साथ काम करूंगा।

श्रवणजी बोले, आपका यह कॉमरेडीपना छोड़िए। सुधीरजी जो कह रहे हैं उसकी गंभीरता समझिए। मैंने कहा, उदयपुर का स्टॉफ बढ़िया काम कर रहा है। सात दिनों में मैंने ऑब्जर्व किया है।

सुधीरजी बोले, आपको लगता है स्टॉफ ठीक है, तो आप देख लीजिए। बाद में फिर मैं यह नहीं सुनूंगा कि फलां आदमी सहयोग नहीं कर रहा है। मैंने कहा, भाई साहब वो सारे लोग बढ़िया हैं। मुझे नहीं लगता, मेरे लिए परेशानी पैदा करेंगे। किसी तरह की परेशानी हुई भी मैं फेस करुंगा। आप तक बात पहुंचने जैसी नौबत नहीं आएगी।

एडिटोरियल टीम का इंक्रीमेंट मैं चाहूं वैसा होगा :

सुधीरजी ने श्रवणजी की तरफ देखते हुए कहा, निकाल दीजिए इनका आदेश। फिर से बोले, कीर्ति तुम संभाल तो लोगे ना? मैंने कहा, भाई साहब आपको शिकायत नहीं मिलेगी, लेकिन मेरी एक शर्त है। अब सुधीरजी, श्रवणजी ने प्रश्नवाचक नजरों से मुझे देखा। सुधीरजी बोले, कैसी शर्त? मैंने कहा, जब भी इंक्रीमेंट होगा तो उदयपुर एडिटोरियल टीम का इंक्रीमेंट मैं जैसा चाहूं वैसा करुंगा। उन्होंने एक पल सोचा और बोले, ठीक है तुम तय करना। मैंने कहा, भाई साहब इस आशय का मेल फाइनेंस कंट्रोलर पीजी मिश्रा को कर दीजिए। उसकी कॉपी मुझे भी सेंड करवा दीजिए।

उन्होंने फोन पर ही अपने पीए (शायद आशीष ममगाई) को आदेश नोट कराया कि भास्कर ग्रुप के एडीशनों में अप्रैल में होने वाले इंक्रीमेंट में उदयपुर एडीशन में एडिटोरियल टीम का इंक्रीमेंट जैसा कीर्ति राणा चाहेंगे, वैसा होगा। मीटिंग समाप्त हुई। मैं श्रवणजी के पीछे-पीछे उनके केबिन में पहुंचा। वो समझा रहे थे, सुधीरजी ने तुम पर भरोसा किया है। खूब मन लगा कर काम करना।

किसी तरह की भी परेशानी हो तो मुझे बताना। कैसे जाओगे, फैमिली का क्या करोगे? मैंने बताया कि फैमिली शिफ्ट करूंगा उदयपुर, सारा सामान भी ले जाना होगा। उन्होंने एचआर डिपपार्टमेंट हेड (संभवतः जयंत मिश्रा) को फोन पर निर्देश दिए कि उदयपुर ज्वाइन कर रहे हैं। यात्रा और सामान शिफ्टिंग सम्बन्धी बिल भेजेंगे, तुरंत मंजूर करदें। तब राजस्थान स्टेट हेड एन. के. सिंह थे। उन्हें भी इस आशय की सूचना दे दी। -**क्रमश :**

स्मृतियों के शिखर (120) : डॉ. महेन्द्र भानावत

हत्या के प्रसंग व्यंतरवासी देव बने लोकदेवता सगसजी

'जिनकी मृत्यु हत्या-प्रसंग में होती है वे व्यंतरवासी देव बनते हैं। उनकी रूह भटकती रहती है किन्तु सम्मानपूर्ण स्थान (आसन) मिलने पर वे शान्त हो जाते हैं और उनकी आत्मा मानव कल्याण में लग जाती है।'

राजस्थान में शायद ही कोई गांव-शहर ऐसा हो जहां लोकदेवता का स्थान नहीं हो। गिनती की दृष्टि से इन लोकदेवताओं की कोई गणना नहीं की जा सकती। इनमें पुरूष जहां लोकदेवता हुए हैं वहां स्त्रियां भी लोकदेवियों के रूप में लोकमान्य हैं। यहां हर परिवार, गोत्र-अटक, समाज और गांव के लोक देवता हैं। इनकी मान्यता के कई रूप हैं। इन लोकदेवताओं में सगसजी भिन्न प्रकार के देवता हैं जिनकी मान्यता खासतौर से मेवाड़ अंचल में अधिक है।

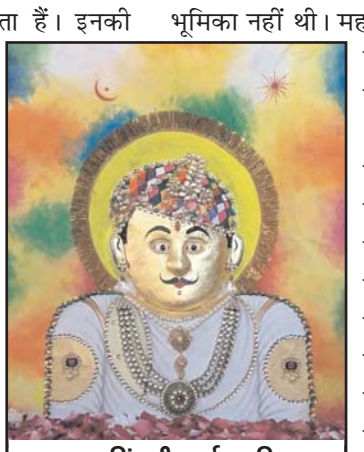

सुलतानसिंहजी, सर्वऋतुविलास

सगसजी का अर्थ-वैभव :

सगसजी से तात्पर्य उस विशिष्ट शख्स से है जिसका संबंध मेवाड़ राज्य के राजदरबार, ठिकाने तथा क्षत्रिय वीर-बहादुरों से है जो धोखाधड़ी, छलप्रपंच, शक-षड़यंत्र तथा बहकावे के शिकार बन अकाल मृत्यु को प्राप्त हुए।

उदयपुर में सर्वऋतु विलास वाले सगसजी सुल्तानसिंहजी सबसे प्राचीन तथा प्रथम सगसजी हुए। ये महाराणा राजसिंह के ज्येष्ठ पुत्र थे। मृत्युपरांत ये लोकसेवार्थ सगसजी के रूप में देवरूप स्थापित हुए। ऐसे सगसजी गांवों में भी मिलते हैं। वर्ष में एक दिन श्रावण मास के शुक्ल पक्ष में प्रथम सोमवार को इन सबका जन्मोत्सव मनाया जाता है। उदयपुर में ही सगसजी के कई स्थानक हैं। इनकी शाही शानोशौकत से पूजा-अर्चना होती है।

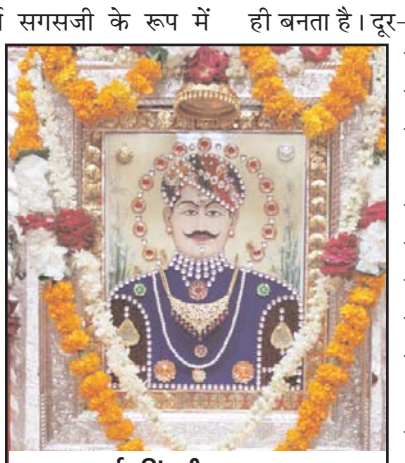

अर्जुनसिंहजी, गुलाबबाग

जन्मोत्सव पर विशेष रूप से सगसजी को शाही आंगी धारण कराई जाती है। उन्हें स्वर्ण वर्क, रजत डंक, कोट, मोठड़ा, इमली, तुर्रा, छोगा, चन्द्रमा, कंठला, स्वर्ण बादला, छत्र, चंवर, ढाल, तलवार आदि से श्रृंगारित किया जाता है। सेवा-पूजा, चौकी, आंगी, हवन, भजन, आरती, महाआरती, भोग, राजभोग तथा रात्रि जागरण के विशेष कार्यक्रमों में अपार जनसमूह उमड़ पड़ता है।

महाराणा राजसिंह काल के सगसजी :

मेवाड़-महाराणा राजसिंह (1652-1680) बड़े पराक्रमी, काव्य रसिक और गुणीजनों के कद्रदान थे साथ ही बड़े खूंखार, क्रोधी तथा कठोर हृदय के भी थे। इनका जन्म 24 सितम्बर 1629 को हुआ। इन्होंने कुल 51 वर्ष की उम्र पाई। इनके आश्रय में राजप्रशस्ति, राजरत्नाकर, राजविलास एवं राजप्रकाश जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे गये। राजसमंद जैसी बड़ी विशाल झील का निर्माण कराने का श्रेय भी इन्हीं महाराणा को है। इसकी पाल पर पच्चीस शिलाओं पर राज-प्रशस्ति महाकाव्य उत्कीर्ण है। चौबीस सर्ग तथा 1106 श्लोकों वाला यह देश का सबसे बड़ा शिलालेख है साथ ही शिलाओं पर खुदे हुए ग्रंथों में भी यह सबसे बड़ा काव्य-ग्रंथ है।

महाराणा राजसिंह ने मेवाड़ पर चढ़ आई, बादशाह औरंगजेब की सेना का बड़ी बहादुरी से मुकाबला किया और उसे तितर-बितर कर बुरी तरह खदेड़ दी। इनके तीन पुत्र हुए। सबसे बड़े सुलतानसिंह, फिर सगतसिंह और सबसे छोटे सरदारसिंह। उदयपुर मेवाड़ में इन तीनों की हत्या हुई। उसके बाद ये तीनों देवता के रूप में सगसजी के नाम से थरपित हुए।

मुख्य सगस सुलतानसिंहजी :

महाराणा राजसिंह के सबसे बड़े पुत्र सुलतानसिंह की भी हत्या की गई। यह हत्या सर्वऋतु विलास में भोजन में, जहर देकर की गई। यद्यपि इस हत्याकांड में महाराणा की कोई भूमिका नहीं थी। महाराणा ने न जाने क्यों हत्या करने वालों की कोई खोजखबर नहीं ली।

उदयपुर में सर्वऋतु विलास में जहां सुलतानसिंहजी को जहर दिया गया वहां सगसजी के रूप में उनकी प्रतिष्ठा की हुई है। आजादी के बाद ये सगसजी लोकजीवन में लोकदेवता के रूप में सर्वाधिक मान्य हुए। इनकी यह लोक प्रसिद्धि शनैः शनैः ग्रामीण क्षेत्रों में भी बढ़ रही है। प्रत्येक शुक्रवार को इनके दर्शनों एवं मानमनौती के लिए देर रात तक श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है। जन्मोत्सव पर तो यहां का रागरंग देखते ही बनता है। दूर-सुदूर तक के इतने भक्त उमड़ते हैं कि दर्शन करने में ही काफी समय गुजारना पड़ता है।

सुलतानसिंहजी, पीछोली

सुलतानसिंहजी गुलाबबाग स्थित सर्वऋतु विलास में दूसरी मंजिल के छोटे से कक्ष में दीवाल के एक कोने में, ऊंचे आलिए में शोभायमान हैं। ये सर्वाधिक प्रभावी देवता हैं। श्रद्धालु जो भी मनौती करता है, उसकी इच्छा पूर्ण होती है। इनके संबंध में चमत्कारों से परिपूर्ण कई किस्से जनजीवन में प्रचलित हैं। वर्तमान में धर्मनारायण एवं प्रकाश दशोरा नामक दोनों भाई इनकी सेवा-पूजा का कार्य संभाले हुए हैं।

जोगपोल के सगस सरदारसिंहजी :

महाराणा राजसिंह के तीसरे पुत्र सरदारसिंह उदयपुर की मंडी की नाल स्थित जोगपोल में बिराजमान हैं। महाराणा के कुल आठ रानियां थीं। सबसे छोटी विचित्रकुंवर थी। वह बीकानेर राजपरिवार की थी। विचित्रकुंवर बहुत सुन्दर थी। महाराणा राजसिंह ने उनके सौंदर्य की चर्चा सुनी तो अपनी ओर से उससे विवाह का प्रस्ताव भिजवाया। बाकानेर महाराजा ने इस प्रस्ताव को

महंत मीठ्ठालालजी चित्तौड़ा

यह जानकार स्वीकार कर लिया कि महाराणा के कुंवर के लिए आया है। कारण कि विचित्रकुंवर और सरदारसिंह हम उम्र के थे।

सरदारसिंह मात्र विचित्रकुंवर से तीन वर्ष बड़े थे किंतु महाराणा ने तो यह प्रस्ताव अपने लिए भिजवाया था और इसी दृष्टि से वे बीकानेर शाही बारात लेकर गए तब मजबूरन बीकानेर नरेश ने उनके साथ विचित्रकुंवर का विवाह करा दिया।

विवाहोपरान्त विचित्रकुंवर और सरदारसिंह का सम्बन्ध मां बेटे के रूप में प्रगाढ़ होता गया।

अधिकांश समय दोनों का साथ-साथ व्यतीत होता। साथ-साथ भोजन करते, चौपड़ पासा खेलते और मनोविनोद करते। इससे अन्यों को ईर्ष्या होने लगी फलस्वरूप महलों में उनके खिलाफ छल प्रपंच एवं धोखा षड़यंत्र की सुगबुगाहट शुरू हो गई। मुंह लगे लोग महाराणा के कान भरने लग गये।

बख्तावरसिंहजी, कंवरपदा

इन मुंह लगों में उदिया भोई महाराणा का प्रमुख सेवक था। उसे रानी विचित्रकुंवर और राजकुमार सरदारसिंह का प्रेम फूटी आंख भी नहीं देखा गया। वह प्रतिदिन ही उनके खिलाफ महाराणा को झूठीमूठी बातें कहकर उद्वेलित करता। कई तरह के अंटसंट आरोप लगाकर उन्हें लांछित करता। यहां तक कि दोनों के बीच नाजायज सम्बन्ध जैसी बात कहने में भी उसने तनिक भी संकोच नहीं किया। इससे महाराणा को दोनों के प्रति सख्त नफरत हो गई।

एक दिन उदिया ने अवसर का लाभ उठाते हुए महाराणा से कहा कि अन्नदाता मां-बेटे की हरकतें दिन दूनी बढ़ती जा रही हैं। जब देखो तक हंसी ठट्ठा करते रहते हैं। साथ-साथ रमते रहते हैं। साथ-साथ भोजन करते हैं और साथ-साथ सो भी जाते हैं। यह सब राज परिवार की मर्यादा के सर्वथा प्रतिकूल है जो असह्य है और एक दिन बदनामी का बड़ा कारण सिद्ध होगा।

मुंहलगे उदिया का यह कथन महाराणा राजसिंह के लिए अटूट सत्य बन गया। उन्होंने जो कुछ सुना-देखा वह उदिया के कान-आंख से ही सुना देखा अतः मन में बिठा लिया कि रानी और कुंवर के आपसी संबंध पवित्र नहीं हैं। गुससे से भरे महाराणा ने उदिया को कहा कि कुंवर को मेरे समक्ष हाजिर करो।

प्रतिदिन की तरह कुंवर ग्यारह बजे के लगभग यतिजी से तंत्र विद्या सीखकर आये ही थे। फिर भोजन किया और रानीजी के कक्ष में ही सुस्ताने लगे तब दोनों को नींद आ गई। उदिया के लिए दोनों की नींद अंधे को आंख सिद्ध हुई। वह दौड़ा-दौड़ा महाराणा के पास गया और अर्ज किया कि रानीजी और कुंवरजी एक ही कक्ष में सोये हुए हैं, हजूर मुलाइजा फरमालें। उदिया महाराणा के साथ आया और रानी का वह कक्ष दिखाया जिसमें दोनों जुदा-जुदा पलंग पर पोढ़े हुए थे।

महाराणा का शक सत्य में अटल बन चुका था। उदिया बारी-बारी से पांच बार कुंवर को हजूर के समक्ष हाजिर करने भटकता रहा पर कुंवर जाग नहीं पाये थे। छठी बार जब वह पुनः उस कक्ष में पहुंचा तो पता चला कि कुंवर समोरबाग हवाखोरी के लिए गये हुए हैं। उदिया भी वहां पहुंचा और महाराणा का संदेश देते हुए शीघ्र ही महल पहुंचने को कहा।

कुंवर सरदारसिंह बड़े उल्लसित मन से पहुंचे किन्तु महाराणा के तेवर देखते ही वे घबरा गये और कुछ समझ नहीं पाये कि उनके प्रति ऐसी नराजगी का क्या कारण हो सकता है। महाराणा ने कुंवर की कोई कुशलक्षेम नहीं पूछी और न मुजरा ही झेल पाये बल्कि तत्काल ही पास रखी लोहे की गुर्ज का उनके सिर पर वार कर दिया। एक वार के बाद दूसरा वार और तीसरा वार गर्दन पर करते ही सरदारसिंह बुरी तरह लड़खड़ा गये।

राजमहल के शंभु निवास में यह घटना 4.20 पर घटी। यहां से कुंवर सीधे शिवचौक में जा गिरे। भगदड़ और चीख सुनकर राजपुरोहित, कुलगुरु सत्यानन्द और उनकी पत्नी वृद्धदेवी दौड़े-दौड़े पहुंचे।

कुंवर की ऐसी दशा देख दोनों हतप्रभ हो गये। वृद्धदेवी ने अपनी गोद में कुंवर का सिर रखा और जल पिलाया। प्राण पखेरू खोते कुंवर ने कहा- 'मैं जा रहा हूं। पीछे से मेरी डोली न निकाली जाए मुझे शैय्या पर ही ले जाया जाय।'

यही हुआ। महाराणा तो चाहते भी यही थे कि उनकी दाहक्रिया भी न की जाय किन्तु कुलगुरु और गुरुपत्नी ने सोचा कि चाहे राजपरिवार से कितना ही विरोध लेना पड़े किन्तु राजकुमार की शवयात्रा तो निकाली जायेगी।

-शेष पृष्ठ सात पर

कोरोना पर दो तुक्तक

(1)

कोरोना-कोरोना, कुछ तो करो ना।
अकड़ कर बैठा है, जालिम डरो ना।
इसे भगाओ ना
टीका लगाओ ना
बहुत कुछ भोगा है, पिंड छुड़ाओ ना।।

(2)

जब से यह फैला है, पाया नहीं धेला है।
पूरी दुनिया में यह, आया अकेला है।।
अतिवृष्टि को देखा
अनावृष्टि को लेखा
कोरोना भाई जान, आफत का खेला है।।

शोकसूचक माण्डनांकन

उदयपुर में घर के मुख्य द्वार पर प्रथम होली के एक दिन पूर्व शोकसूचक माण्डनांकन बनाती गौरी पालीवाल।

शब्द रंजन

उदयपुर, गुरूवार 01 अप्रेल 2021

सम्पादकीय

बेरंग होली के बदलते रिश्ते

इस बार की होली जैसी पिछले सौ सालों में नहीं देखी गई। देखा तो अनेकों ने छपन्या भी नहीं पर उसकी याद गीतों-कथाओं तथा मिथकों में कैद बनी हुई है। कोरोना की भी यही स्थिति बनी हुई है। यह तो उन सभी कालों का बाप बनकर आया है। महाकाल ही इसे समझा जाएगा।

प्रकृति को देखें तो बहुत सारी चीजें फैलती-सिकुड़ती हैं। मौसम के अनुसार ऋतुओं का मेल बेमेल होता लगता है। कभी दिन मोटा होता है तो कभी रातें। हवा-पानी का जोर भी घटता-बढ़ता रहता है। समुद्र का उफान-तूफान भी कई बार डराता चौकड़ी भूला देता है तो कईबार खिलखिलाता खेलता नजर आता है।

सो इसबार होली की न रंगतें मिली, न बहारें। न टोली मिली, न ठिठोली। न चंग मिला, न वैसा अंग ही बदरंग हुआ। प्रिया मिलन, पत्नी मिलन, प्रेयसी मिलन सब धरे रह गये जैसे उन्हें सीलन लग गई। पिचकारी तो देखने तक को नहीं मिली। गारी भी नहीं सुनी गई। कौन किसको दे। गुलाल का रंग उड़ गया तो किसी गाल पर कोई लाल ललाई नहीं मिली। कांटों को सहला-सहला कर फूलों का रस पीनेवाले सरस हुए भी नहीं लगे। वह मारामारी भी नहीं हुई। कौन किसके लट्ठ ठोके। छड़ियां नदारद। ढोल बेढोल। मनचले मनसुखे उदास। सवारी करनेवाले नहीं तो कोई गधा भी नहीं दिखाई दिया।

होली का चंदा लेने भी कोई बंदा नहीं आया। जो मोहल्लेवाइज होली रूपती थी वह भी नहीं रूपी। कई मोहल्ले बिना होली के डांडे के बांडे ही रहे। होली नहीं तो उसके बड़कुल्ले-बड़ुल्ये कौन बनाये! होलीथड़े एकत्र होकर गीत गानेवाली बहिनें और उनके भाई नहीं मिले।

होली की झुलसन से उसका शरीर फफोलों से मवादी बन गया था तभी तो कांटेवाली दंश देती फफोलोंयुक्त होली हमें मिली जिसको जरासी लपटें मिलते ही उसे वहां से हटा किसी पास के कुए ताल-तलैया में ठंडा कर दिया जाने की परंपरा रही।

हमने उन मोटे-मोटे फूलों सी फूलन को फफोला का अमंगलकारी नाम नहीं देकर सिंघाड़ा जैसा बोधन दिया और उसकी छाल के साथ सिंघाड़ा मिला मुंह का बीड़ा बनाया जिससे होली दीदी ने हमको हजार पान की ललाई से भी अधिक राचन दिया। यही तो होली माता का हमको आशीष है।

और फिर जो होली झुलसी उसका बालूड़ा क्यों न झुलसे। सात दिन बाद उसको लगी चेचक, छोटी-मोटी जैसी भी उभरी उसकी शांति के लिए बालुड़े की रक्षा के लिए माता शीतला की मनौती स्वरूप सातम को उसका उत्सव-अनुष्ठान मनाना शुरू किया। प्रमाण रूप में उस दिन, पूरे दिन ठंडा खाना खाने का व्रतानुष्ठान करने का संकल्प लिया। माता की आराधना के अनेक गीत, रतन जतन कर राखजे ए मां जैसे कड़ावे बहुत कुछ मन के मणिये कहते मिलते हैं।

और देखो, होली के दूसरे दिन से घर की दशा-दिशा ठीक बनी रहने के लिए दस दिन दशामाता के व्रत-कथा-अनुष्ठान चलते हैं और उधर बालिकाएं होली की भस्मी की पिंडियां बनाकर 15 दिन तक पूजती हुई अंत में सौलहवें दिन षोडशी के रूप में गणगौर उभरती है जो सुहाग, चूड़ा, चूनड़वाली का चिर सौभाग्य रखती हैं तो वराकांक्षिणियों को उनकी चाह माफिक वर प्राप्ति का वरदान देती है। गणगौर के बाद त्यौहारों की लड़ियां पूरी हो जाती हैं। कहावत भी है- 'तीज तेवारां बावड़ी, ले डूबी गणगौर।'

इतिहास लेखन के लिए बहियां बहुमूल्य

उदयपुर (वि.)। भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के सौजन्य से जोधपुर में वहां के राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी के तत्वावधान में सात दिवसीय 'पाण्डुलिपि पठन एवं संरक्षण' वर्कशॉप में प्रो. जे. के. ओझा ने बेदला ठिकाने की 'पड़ाखा बही' पर प्रकाश डालते हुए बताया कि सांस्कृतिक दृष्टि से इसका विशिष्ट महत्त्व है। इसमें वैवाहिक रीति-रिवाज, खान-पान, वेशभूषा-आभूषण आदि के बारे में बखूबी जानकारी मिलती है। इसमें ज्ञान और अक्षर ज्ञान की जानकारी भी दी है। इतना ही नहीं, ठिकानों के राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक इतिहास लेखन की दृष्टि से इस प्रकार की बहियां बड़ी उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं।

संस्थान के सहायक निदेशक डॉ. विक्रमसिंह भाटी ने पाण्डुलिपि पठन में पट्टा बहियों, हकीकत बहियों, सनद बहियों तथा रूक्के-परवानों के पठन से शोधार्थियों का मार्गदर्शन किया।

बैठे ठाले कविता

पूना के वरिष्ठ नागरिक संघ ग्रूप ने एक फोटो के माध्यम से चार पंक्ति की कविता आमंत्रित की ताकि बुजुर्ग घर बैठे अपनी काल्पनिक दौड़ान की पहचान दे सकें। इसमें बीस प्रतियोगी सम्मिलित हुए। मैंने भी प्रयास कर यह चतुस्पदी लिखी जिसे खूब सराहा गया-

गृहस्थी के प्रपंच से दूर
जीवन के उत्तरार्ध में
पकड़ स्मृतियों की डोर
आओ बैठें विश्रान्ति में।

- बनवारीदत्त जोशी

दशामाता सीख दो घर जावां

-डॉ. कविता मेहता-

होली के ठीक दूसरे दिन से दशामाता के व्रत, कहानी-कथन तथा गीत प्रारम्भ हो जाते हैं। ये दस दिन होते हैं। इनमें प्रतिदिन औरतें धर्मजीवी बनी रहती हैं। ये दिन अगता कहलाते हैं। औरतें स्वच्छ तन-मन लिये न आठी-चोटी-सिणगार करती हैं, न सिलाई करती हैं, न कपड़े धोती-पछांटती हैं, न साबुन लगाती हैं, न खाण्डती-पीसती हैं। पूर्णत: धर्ममय आचरण कर गृहदशा की देवी दशामाता तथा दाड़ा बावजी की आराधना में व्यतीत करती हैं।

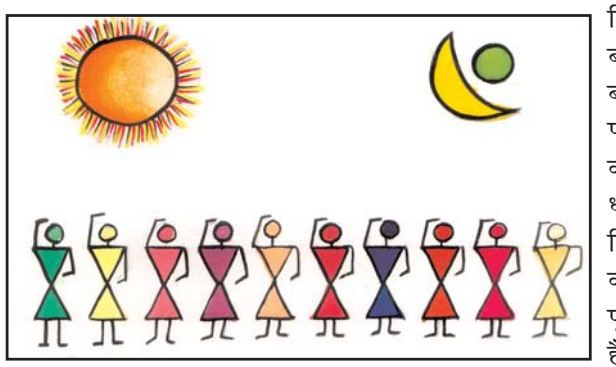

दशामाता रात की रानी रानादे है और दाड़ा बावजी दिन के देवता सूर्य हैं। ये सम्पूर्ण सृष्टि के नियंता हैं। पूरी सृष्टि-प्रकृति-पर्यावरण के स्वामी हैं। प्रतिदिन इनसे सम्बन्धित मनुष्य जीवन से जुड़ी गृहस्थ समाज की पारिवारिक कथाओं का कथन-श्रवण होता है। प्रतिदिन दस कथाएं सुनकर ही व्रतानुष्ठान पूरा जाता है। एक समय भोजन होता है।

मेरी बड़ी बुआ सोवनबाई ने बारह वर्ष की उम्र में विवाह किया फिर होली पर उन्हें दशामाता का व्रत शुरू करवाया जो आज भी 98 वर्ष की उम्र लिये कर रही हैं। हर वर्ष वेळ यानी डोरा भी बदलती हैं। छोटी बुआ सोबाकबाईजी भी करीब 80 वर्ष की उम्र लिए दशा पाल रही हैं। उन्होंने तो अपनी दोनों बहुओं को भी दशा दिला रखी है।

दशामाता की कहानियां मौखिक रहती हैं। एक महिला कथा कहती है, शेष सभी व्रतार्थी महिलाएं श्रवण करती हैं। फिर समूह गीत गाती हैं। सभी कहानियां अद्‌भुत हैं। पारिवारिक कहानियां आपसी ईर्ष्या-द्वेष, झगड़े-टंटे, दंद-फंद, मोह-माया, बक-झक, लोभ-लालच, मंगल-अमंगल से जुड़ती अन्त में धर्म कर्ममय आचरण द्वारा सुख-सन्तोष, शान्ति-समृद्धि का सन्देश देती हैं। सभी जातियों से जुड़ी कहानियां सुनकर अचरज होता है।

देवी-देवता से जुड़ी कहानियां धर्मराज, सूरज नारायण, राम-लछमण, शीतला, पथवारी, गंगामाता, आसमाता, महादेव, भंवराबावजी, तुलसां की हैं। ये भेष बदल धरती पर आकर भक्तों की परीक्षा लेते हैं। कठिनाइयों से उबारते हैं।

ऐसी कथाएं भी हैं जो विस्मय, चमत्कार तथा आश्चर्यजनक खूबियां लिये हैं। इनमें सूरज कोढ़ी बनकर आते हैं। गणेशजी बहू की रखवाली करते हैं। पीपल कुंवर देता है। बड़ की जड़ में घोड़ा-दासी जा धंसते हैं। खटिया हार निगलती है। बछिया सोने का मींगणा देती है। पथवारी पूजन में चूहिया कपड़े लाती है। बंदरी वनफल चढ़ाती है। चिड़िया दाना भेंट करती है।

दशामाता के दीवाल पर विशिष्ट अंकन पूजे जाते हैं जो थापे कहलाते हैं। अन्तिम दिन पीपल-पूजा की जाती है। पीपल वृक्षों में सर्वाधिक गुणी, कई फल देने वाली है। इसका पत्ता ताम्रपत्र कहलाता है। इसके नीचे तांबा-पीतल की खान होती है। इसके पत्ते पर सेमपत्ते के रस की लिखावट वर्षों तक अमिट रहती है। पूरे वर्ष महिलाएं दशामाता का दस गांठों वाला कच्चे सूत का पीला डोरा गले में धारण किये रहती हैं। कहीं-कहीं पुरुष भी यह व्रत करते हैं। मैंने 1989 में इसी विषय पर शताधिक कहानियां एकत्रित कर पीएच.डी. की उपाधि ली। यह शोधप्रबन्ध प्रकाशित है।

रतन जतन कर राखजो ए मांय

-डॉ. कहानी भानावत-

चैत्र मास में होली के बाद कहीं सप्तमी तो कहीं अष्ठमी पर शीतला माता का त्यौहार मनाया जाता है। इस दिन ठण्डा खाया जाता है।

माता शीतला चेचक की देवी मानी जाती है। अत: औरतें एक रात पहले माता सम्बन्धी नाना गीत गाती हैं जिनमें माता का नखशिख वर्णन, उसका गुण-गौरव, उसकी महिमा तथा बाल-बच्चों को सुन्दर स्वस्थ रखने की भावना व्यक्त की जाती है। इसी रात्रि को दूसरे दिन का खाना बना लिया जाता है जिसमें ढोकले, ओलिया, चावल, पूड़ियां तथा अमचूर, केल, सांगरी, वरकणे व कुरमुदे की सब्जी बनाई जाती है।

प्रात: होने पर माता के लिए पूजापे की थाल सजाई जाती है जिसमें कुंकुम्, कूलर, मेंहदी, सुपारी, दही, ओलिया, पतासी, ढोकला, चावल, एक मुट्ठी धान, आटे के बने दीपक रखे रहते हैं। पूजा थाल लेकर नये वस्त्राभूषणों से सज्जित हो औरतें माताजी के थानक पर जाती हैं जहां माताजी के रूप में चेचकनुमे धांधले पत्थर पूजे जाते हैं। ये पत्थर शरीर पर चेचक की तरह ही फफोलेनुमा उभार दिये होते हैं। यहीं माताजी की पूजा के बाद छोटी-छोटी कंकरियां एकत्र कर पथवारी के रूप में पूजी जाती है। इस समय जो गीत गाये जाते हैं उनमें पारिवारिक ऋद्धि-समृद्धि सूचक भावनाएं देखने को मिलती हैं।

कहीं-कहीं शीतला के व्रत भी किये जाते हैं। व्रत करने के लिए औरतें दीवार पर सिन्दूर कुंकुम् का थापा बनाती हैं। थापों में कहीं गोलाई में माताजी के हाथ, सातिया, त्रिशूल एवं मेंहदी की सात बिन्दियां दी हुई होती हैं तो कहीं माता के वाहन गधे द्वारा गाड़ी

खींचने का दृश्य बनाया जाता है। ये थापे बड़े कलात्मक, आकर्षक और धार्मिक अभिव्यक्ति के पोषक होते हैं। राजस्थान में इस त्यौहार पर स्थान-स्थान पर मेलों का भी आयोजन होता है जिनमें ग्रामीण लोग बड़े उत्साह से भाग लेते हैं। लोकोत्सव के रूप में यह राजस्थान के प्रमुख पर्वों में से एक है।

इस दिन माता शीतला की जो कहानी कही जाती है वह इस प्रकार है-

होली जली तो उसकी ज्वाला में शीतला तथा बोदरी (बड़ी और छोटी चेचक) माता झुलस गई। 'जलूं रे जलूं' कहते दोनों महल पहुंची जहां घोड़ों के चरवादारों ने उनके बाकले छांट दिये। यहां से दोनों कुम्भकार के वहां गई। कुम्भकार की लड़की ने मिट्टी का पानी छिड़का तथा पिछले दिन की बनी ठण्डी राबड़ी पिलाई जिससे उन्हें आराम मिला। जाते-जाते माताजी ने कुम्हारिन को कहा कि आज से तीसरे दिन पूरे ग्राम में आग लगेगी। सारा गांव जलकर भस्म हो जायेगा पर तुम्हारा घर बाल-बाल बचा रहेगा।

कुम्हारिन बोली, तब राजा हमें दण्ड देगा। माताजी ने कहा, तब कहना कि होली की ज्वाला से माताजी जल गई तो तुम्हारे चरवादारों ने बाकले छिड़के जबकि यहां से मिट्टी का ठण्डा पानी छिड़का गया और ठण्डी राबड़ी पिलाई गई। लड़की ने पूछा, आग कैसे बूझेगी? माताजी ने कहा कि होली के छठे दिन रात्रि को सातवें दिन का भोजन बनाकर उसे ठण्डा ही खाना। इससे आग शान्त हो जायेगी।

ठीक तीसरे दिन आग लगी। सारा गांव जल गया। कुम्हार का घर नहीं जला। इससे गांव वालों ने सोचा कि आग लगाने में कहीं कुम्हार का ही हाथ लगता है। कुम्हार को बुलाकर इसका कारण पूछा गया तो कुम्हार ने कुछ भी जानने से मना कर दिया पर उसकी लड़की ने सारा किस्सा कह सुनाया। लड़की के कहे अनुसार राजा ने डूंडी पिटवाई कि छठ की रात को सभी लोग दूसरे दिन का खाना बना लें और प्रात: होने पर माता शीतला की पूजा कर ही फिर भोजन लें। ऐसा होते ही आग शान्त हो गई और सारा गांव फिर बसना प्रारम्भ हो गया।

'ए माता शीतला जैसी कुम्हार को तूठी वैसी ही सब को तूठना।'

कोरोना पच्चीसी — शब्द नहीं, रंजन नहीं, सबका है बेहाल। बेताला सब होरहे, जांच करो पड़ताल।। — कोरोना पच्चीसी

गुरुजनों को नमन :

गुरु अनेक हैं, सभी याद हैं, यदि करूं मैं ध्यान।
देखी दुनियां और दिखाया, निर्भय सकल जहान।।
खाली आओ, खाली जाओ, फिर क्यों माथा फोड़ी।
यों तो बड़ी जिन्दगी है, पर मानो उसको थोड़ी।।
मेरे लिए लोक में बिखरा, सभी कबाड़ा सोना।
किंतु बड़ों की सीख यही है, मत कर रोना धोना।।
श्रद्धा सहित नमन करता हूं, जिनसे पाया ज्ञान।
जितना लेओ वापस देओ, तब होगा कल्याण।।

प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत :

रंग घणा सा रंग आपनैं, सारंग छो बहुरंग।
दीठ न लागै पीठ नैं, सगळा निखरै अंग।।
सगळा निखरै अंग, रंग धनख ज्यूं तनजा।
पीठां-परली-पीठ, विभागां सिम-सिम खुलजा।।
जब्बुभाई रा दरबार, घणाई देख्या।
एक-एक सूं रतन, हाजरी देता लेख्या।।
जन मंगल जब्बु मंगल, जग मंगल सोवै।
सारंग सा ने रंग घणा, म्हां सबने मोवै।।

डॉ. विद्याविन्दुसिंह :

एक बिंदु का सिंधु बनाया, खारा मीठा मेल।
खेल रेल का देखकर, थम गई रेलमपेल।।
थाह नहीं विद्या की कोई, नहीं रही अब चाह।
भूषण खरदूषणजी देखे, पटकी देते राह।।
राम अयोध्या सुनें हमारी, तुलसी माला फेरें।
जो कुछ बिखरा रहे, समेटे भवसागर को तेरें।।

बसंत निरगुणे :

यह खेला भी खूब चला है, निरगुण और सगुण।
जनजाति जा पूछलो, काहे को सिर धुण।।
पगडंडी पे रहो खींचते, लेन-लेन पर लेन।
देने वाला ही देता है, जो देता वही देन।।

डॉ. पूरन सहगल :

कहां हमारी नाव थी, कहां खुदा तालाब।
विधि का लेख अजीब है, कहां अटक कहां आब।।
यहां मनासा में तपी, बालकवि की धूणी।
चरमर चरखा चला हमारा, और कतगई पूणी।।
अब सब सूना हो गया, मित्रों की अजय विजय है।
साहित का रेजा बुनता हूं, यही धुन, यही लय है।।

डॉ. भगवानदास पटेल :

साधारण किसान होकर भी, बड़ी शान से जीते हैं।
फटा पुराना जैसा भी हो, अपना कपड़ा खुद बुनते हैं।।
आदिवासियों के सम्मानित लेखक हैं गुजरात के।
सीधे सादे सरल चित्त मनभावन पुण्य प्रभात के।।
चाह नहीं, चिंता नहीं, मनुआ बेपरवाह।
कुछ लेना देना नहीं, नहीं आह, नहीं वाह।।

डॉ. उषा वर्मा :

यादें ही रह गईं गर्व करने को काफी।
समय नहीं वह रहा, जोड़ करने का बाकी।।
तब भी है उत्साह सवाया, बना रहे जस।
घाट रहे आबाद, कहानी सुनें इसी मस।।
हवा नहीं, पानी नहीं, उलझा है जंजाल।
इस होली तो रोली फीकी, कौन लगाये गाल।।

मालिनी काले :

ग्रीष्म ऋतु में जो ठिठुरे है, ओढ़ रजाई।
जोगी के तूम्बे संग रह, बांसुरी बजाई।।
महाराष्ट्र की धरती पर, बांसों का बाड़ा।
बिना बाड़ के पनप रहा, नहीं कोई धाड़ा।।

आदिवासियों का संगीत, सुधा बरसाता।
सारे गम पध नीसा, राग छब्बीसा गाता।।

शिव 'मृदुल' :

खिलने थे सो खिल गये, गुलदस्ते के फूल।
कलियां जो कुछ बच रही, उनकी हो नहीं धूल।।
भजन लिखो, भाषण लिखो, लासण लगे न लेश।
देश घूमो परदेश मां, किंचित होय न क्लेश।।
चित्तौड़ी कलदार, टंच टंकार दे रहा।
नहीं किसी से बेर, नहीं झंकार ले रहा।।

माधव नागदा :

कोई मोटी नही, और कोई होती है छोटी।
कमर लंगोटी कच्छ, या कि फिर माथे पर की चोटी।।
पूछूं भाया फर्क कहां है, दड़ी कहो या मारदड़ी।
घर में बिल्ली सास लड़ाती, रण में लिछमी खूब लड़ी।।
नहीं सृजन पर मिलता यारों, पुरस्कार सम्मान यहां।
पड़ा अड़ा या खड़ा लड़ा है, वह पाता प्रभु मान यहां।।
घिसते रहो कलम और करते, रहो तेल मालिश यारों।
मस्त रहे मनड़ा माधव का, कागज कलम कथा वारों।।

बी. एल. माली 'अशांत' :

घोषित अशांत वन, शांतिवन स्थापित किया
जाने कहां प्रभु कैसी ठिठोली है।
रोली रंगरोली महा, मसखरों की टोली जोड़
बेली अलबेली गेली, भांग भांत गोली है।।
हल्लागुल्ला नहीं कोई लिखते हैं राजस्थानी
ऐसे विषय जिन्हें कोई, लिख नहीं पाता है।
अपने सपने को पूरा कर रहे, चुपचाप आप
पदचाप तक कोई, सुन नहीं अघाता है।।

सोहन भानावत :

स्वाभिमान के संयम के, गोमुख के झरने झरते हैं।
नद नाले सूखे खणक पड़े, खाई खड्डे सब भरते हैं।।
सित्तर बरसों से बना रहा, सोहन हलुआ शत स्वाद लिए।
भानावत वंशज का प्रताप, पौरूष लेकर जय गान किए।।
सार्थक जीवन की सुखद कथा, पूछो मनोरमाजी के संग।
पब्लिक पड़ताल रहे जारी, होली के बांटो बहुरि रंग।।
बहु शतक पारदर्शी नापें, सबकी चाहत प्रिय प्रेमभाव।
कानोड़ भोम को करें याद, भटकें अटकें नहीं यही चाव।।

डॉ. जगमल सिंह :

वह शक्ति कहां, मणिपुर में दहाडूं, ब्यावर में राज करूं।
अंग-प्रत्यंग अवेरूं, सोचूं तड़के मसाज करूं।।
साज पड़े सब ढीले, तार बेतार हो गये।
मित्र न देते साथ, इत्र का फूंबा दे सो गये।।
गुरु दिनेश की करूं वंदना, हाथ जोड़कर।
मन अटका झटका देता, सब ध्यान मोड़कर।।

देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्रेश' :

चले गये सखि कोरोना में, व्यंग्यकार इन्द्रेश।
अपलक रह गई ज्योत्स्ना, देख अंधेरा भेष।।
लिखता रहा सदा, शवयात्री ही बनकर जो।
वह मर सकता नहीं, अमर पट्टा उसका लो।।

श्रीकृष्ण शर्मा :

रामचन्द्रजी आगये, सीता को ले साथ।
बिन राधा रूकमण यहां, कृष्ण मल रहे हाथ।।
कृष्ण मल रहे हाथ, आपका अभिनंदन हो।
पुण्य प्रताप पूर्वजों का, सबका मंगल हो।।
जयपुर में हैं कृष्ण, नये अवतारी लाला।
व्यास पीठ पर वेद, पाठ कर बैठे ठाला।।

अनिल भानावत :

लगते कहीं नहीं स्वामीजी, पर स्वामीजी कहें सभी।
ऐसा क्या जादू स्वामीजी, बांच टीपणा कहो कभी।।

हिमांशुराय नागोरी :

रज सूं बणिया जज प्रथम, मित्र मंडल रा ताज।
जतरा चावो साज बजावो, कानोड़ या पर नाज।।
कानोड़ या पर नाज, सब जगां पोंचै ओपै।
आपणी दे पैचाण खरी, नै खूंटो रोपै।।
हिम्मत री कीमत, हिमांशु खणकै ही खणकै।
पावां में वै जोर, जबर पायलां टणकै।।

डॉ. लक्ष्मीनारायण नंदवाना :

नारायण-नारायण गाना, बस्ती जाना, फिर खाना।
शिवकिशोरजी की घंटी ले, सबसे पहले उन्हें जगाना।।
साहित की तूम्बी में फेरी, गपड़सपड़ की घाणी।
तेल री जग्यां गादो निकल्यो, थें बांटी गुड़धानी।।

डॉ. ज्योतिपुंज :

जगरमगर जोती गई, अगरमगर री आण।
जूनां मां जोवो मती, काण कायदा पांण।।

प्रो. धनेश भाणावत :

भानावत भाणावत नी है, एक गोड़ रा जाया।
पण आपस में जुड़ या थका ज्यूं , एक जीव दो पाया।।
एक जीव दो पाया है, अर बुद्धि विवेक सवाया।
छांट-छांट के घड़ या विधाता, नहीं मांगने लाया।।
भानाजी भाणाजी राखी, राज खजाना चाबी।
एक हाथ मां तलवारां, तो दूजै कलमां ढाबी।।
भणत महेंद्र केई बातां, कैवण री नीं, जाणत री नीं।
केई फसलां यूं उगै आप, खादत री नीं, पाणत री नीं।।

डाडमचंद 'डाडम' :

बीज वनां डाड़म कसी, कस्यो मिनख अण बीज।
जोबन कैंह ढाबण ढबे, पिया सावणी तीज।।

प्रो. देवकर्णसिंह राठौड़ :

दूवा यूं टपकण लगै, ज्यूं दूधलड़ी धार।
तारफीणी रा तार ज्यूं, तार-तार में तार।।

डॉ. इकबाल सागर :

गागर खाली पड़ा और, सागर इठलाता।
डूबा है आकंठ, तरन्नुम में क्या गाता।।

ऋषभ भाणावत :

अजी था ही क्या, नहीं राजपाट धन धाम।
सार्थक मानवता करी, ऋषभ धरायो नाम।।
ऋषभ धरायो नाम, सारथक जीवन कीधो।
यथा नाम गुण रक्त, वक्त को काढ़ो पीधो।।
केई ने मकान सुख दीधो, दीधी खरची।
होली पर मन करे, आरती करां 'आरची'।।

कोरोना कायटा :

कोरोना का कायटा, दो कौड़ी नहीं दाम।
सीख 'महेन्द्रा' की यही, इसके देदो डाम।।
डाटी खींचो दोहरी, कट्ठी करो लगाम।
दो जरबा की ठोक दो, लेकर प्रभु का नाम।।
केई लीदा भख्ख, कालजा खाग्यो डाकी।
दंडपोल से उल्टे मुंह दो मौत गधा की।।

-डॉ. तुक्तक भानावत
महाचिव, संप्रति संस्थान के सौजन्य से

डॉ. पगारे को बिड़ला व्यास पुरस्कार

उदयपुर (वि.)। जानेमाने प्रख्यात ऐतिहासिक उपन्यासकार डॉ. शरद पगारे को बिड़ला फाउण्डेशन का प्रतिष्ठित व्यास पुरस्कार देने की घोषणा की गई है। यह पुरस्कार डॉ. पगारे द्वारा लिखित 'पाटलीपुत्र की सम्राज्ञी' पर दिया जायेगा। इन्दौर निवासी डॉ. पगारे ने बताया कि साढ़ा पांच सौ पृष्ठीय यह उपन्यास महान् सम्राट अशोक की माता धर्मा पर केन्द्रित है। अशोक में महानता के जितने भी गुण थे वे सब उनकी माता के संस्कारजनित गुण थे और यही कारण रहा कि अशोक द्वारा सारे कार्य अपनी प्रजा के हित में हुए। माता धर्मा देवीय सौन्दर्य की स्वामिनी थीं।

डॉ. पगारे की यह खूबी रही कि अपने उपन्यासों के माध्यम से उन्होंने उन चरित्रों को स्थापित किया जो अब तक ओझल किवा अचर्चित अनाम ही रहे।

उल्लेखनीय है कि व्यास पुरस्कार के अन्तर्गत चार लाख रूपयों की सम्मान राशि सहित यादगार स्मृतिचिन्ह प्रदान किया जाता है। इससे पूर्व भी डॉ. पगारे अनेक पुरस्कारों से नवाजे जा चुके हैं। होली के इस रंगोत्सव पर डॉ. शरद पगारे को शब्द रंजन की ओर से शत-सहस्त्र रंग।

व्यंग्यकार 'इन्द्रेश' नहीं रहे

उदयपुर (वि.)। प्रसिद्ध व्यंग्य लेखक देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्रेश' का 23 मार्च को असामयिक निधन हो गया। वे समसामयिक घटनाओं से

खबरवान रहते बड़ी संजीदगी के साथ व्यंग्य की धार देने वाले सजग लेखकों में अग्रणी थे। अनेक साहित्यिक पत्रिकाओं में उनके व्यंग्य उनकी अलग पहचान लिये प्रमुखता से प्रकाशित होते रहे। वे अपने स्वभाव में बड़े सहृदय, हंसमुख तथा दिलदारपन के कारण सभी में घुलेमिले थे। जीवनपरिवेश में भी व्यंग्य सदैव उनके हाशिये में विद्यमान रहता था। उनके निधन पर डॉ. ज्योतिपुंज, डॉ. रजनी कुलश्रेष्ठ, किशन दाधीच, डॉ. महेन्द्र भानावत ने एक जिन्दादिल इन्सान के निधन को अपूरणीय क्षति बताया।

गीतकार कुमार शिव भी गये

उदयपुर (वि.)। जयपुर में रह रहे प्रसिद्ध गीतकार कुमार शिव का 21 मार्च को निधन हो गया। व्यावसायिक दृष्टि से वे शिवकुमार

शर्मा के रूप में प्रख्यात न्यायवेत्ता जज रहे। समसामयिक घटनाओं को लेकर वे अपने तटस्थ चिन्तन के लिए प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में त्वरित टिप्पणीकार की हैसियत से जाने जाते रहे। गीतकार किशन दाधीच ने बताया कि उनकी लिखी शिव सतसई तथा जीवनी का प्रकाशन साहित्य क्षेत्र की एक विशिष्ट उपलब्धि रही। डॉ. महेन्द्र भानावत ने बताया कि वे जहां भी जाते, वहां के कवि-मित्रों को याद कर गोष्ठियां आयोजित कर सबसे हंस-मिलकर प्रसन्न होते।

राजस्थान के लोककलाकारों ने नृत्य को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति दिलाने में किया संघर्ष : डॉ. भानावत

उदयपुर (वि.)। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के संघटक महाविद्यालय वाणिज्य एवं प्रबंध महाविद्यालय में राजस्थान दिवस पर 'राजस्थान की लोकसंस्कृति' विषय पर विस्तार व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता भारतीय लोककलामंडल के पूर्व निदेशक लोककलाविज्ञ डॉ. महेन्द्र भानावत थे। अध्यक्षता महाविद्यालय के अधिष्ठाता प्रो. पी. के. सिंह ने की। विशिष्ठ अतिथि व्यवसाय प्रशासन विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. राजेश्वरी नरेन्द्रन, बैंकिंग एवं व्यवसाय अर्थशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. मुकेश माथुर तथा लेखा एवं व्यवसाय सांख्यिकी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. शूरवीरसिंह भाणावत थे।

इस अवसर पर डॉ. महेन्द्र भानावत ने कहा कि राजस्थान की पहचान इसकी लोककला, लोकनृत्य एवं अन्य लोकधर्मी परम्पराओं से है। इन परम्पराओं को जीवित रखने के लिए राजस्थान के भारतीय लोककला मंडल ने सबसे पहले बीड़ा उठाया जिसके कारण ये कलाएं और इनसे जुड़े कलाकारों द्वारा राजस्थान की कठपुतली कला, गवरी नृत्य, फड़ चित्रकला तथा कावड़ जैसी विधा को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति मिली।

प्रो. पी. के. सिंह ने कहा कि जिस दौर में गवरी लेने वालों के विरूद्ध जाति निष्कासन, अर्थदण्ड जैसे आदेश जारी कर इस कला को समूल नष्ट करने का प्रयास किया जा रहा था उस दौर में डॉ. भानावत ने इस विधा को अपने शोध का विषय बनाकर पुनर्जीवन ही नहीं अपितु अनेकों को इस ओर काम करने के लिए प्रेरित किया। आज कई प्रांतों के अनेक विश्वविद्यालयों द्वारा लोकसंस्कृति के विषयों पर अनेक छात्रों ने शोधानुसंधान द्वारा पीएच.डी. की उपाधियां प्राप्त की और अभी भी यह काम और अधिक उत्साह से जारी है। इस अवसर पर डॉ. पारूल दशोरा, डॉ. रेनु शर्मा, डॉ. आशा शर्मा, पुष्पराज मीणा, नरेश कंधारी, डॉ. अनिल शर्मा, डॉ. प्रकाशचन्द्र विजयवर्गीय सहित कई शोधार्थी उपस्थित थे। संचालन प्रोक्टर डॉ. देवेन्द्र श्रीमाली ने किया।

नशामुक्ति एवं परामर्श केंद्र का शुभारंभ

उदयपुर (वि.)। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, (पीआईएमएस) हॉस्पिटल उमरड़ा में नशा मुक्ति एवं परामर्श केंद्र (डी-एडिक्शन सेंटर) का शुभारम्भ किया गया है।

पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि इस डी-एडिक्शन सेंटर पर शराब, गांजा, स्मैक, चरस, गोली, भांग, अफीम, ब्राउन शुगर, कैप्सूल, सीरप, इंजेक्शन, पेट्रोल/ डीजल/ केरोसीन, फ्लूड, मोबाईल/इन्टरनेट एडिक्शन आदि का उपचार व परामर्श दिया जाता है। श्री अग्रवाल ने बताया कि नशा एक बुरी लत है। परिवार में किसी को भी उपरोक्त में से किसी भी प्रकार का नशा होने पर उपचार के लिए पीआईएमएस हॉस्पिटल, उमरड़ा के डी-एडिक्शन सेंटर में सम्पर्क किया जा सकता है। यहां मनोचिकित्सक व व्यसन मुक्ति विशेषज्ञ डॉ. बृजेश पुष्प, इन्द्रपाल सालवी परामर्श व उपचार के लिए उपलब्ध हैं।

स्कोडा को ग्रोथ दिलाएगी 'कुशाक'

उदयपुर (वि.)। स्कोडा ने भारत में तेजी से बढ़ रहे मध्य आकार के एसयूवी सेगमेंट को टारगेट करते हुए नये ब्रांड 'कुशाक' को लॉन्च किया है। स्कोडा कुशाक इंडिया 2.0 प्रोजेक्ट का पहला उत्पाद है।

भारतीय महाद्वीप में अपने इस मॉडल के कैंपेन के लिए स्कोडा ऑटो की प्रमुख जिम्मेदारी में फॉक्सवैगन ग्रुप ने 1 बिलीयन यूरोस का निवेश किया है। इसका फायदा लंबे समय तक स्कोडा और फॉक्सवैगन कंपनी को मिलने की उम्मीद है। भारतीय बाजार को ध्यान में रखते हुए स्कोडा ने एमक्यूबी प्लेटफार्म को अडॉप्ट किया है।

आईसीआईसीआई फाउंडेशन देगा 100 से अधिक अत्याधुनिक डायलिसिस मशीनें

उदयपुर (वि.)। आईसीआईसीआई फाउंडेशन देश में स्वास्थ्य सेवाओं संबंधी बुनियादी ढांचे को और मजबूत करने के लक्ष्य के साथ विभिन्न जिला अस्पतालों को 100 से अधिक अत्याधुनिक डायलिसिस मशीनें निशुल्क प्रदान करेगा।

आईसीआईसीआई फाउंडेशन फॉर इनक्लूसिव ग्रोथ के प्रेसीडेंट सौरभसिंह ने कहा कि इसका उद्देश्य 14 राज्यों के 60 जिलों में वंचित वर्ग के लोगों को सस्ती चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराना है। उदयपुर, जोधपुर, अजमेर, बाड़मेर, भीलवाड़ा, बीकानेर, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, हनुमानगढ़, राजसमंद, सीकर के अस्पतालों में डायलिसिस मशीनें स्थापित की जाएंगी। फाउंडेशन इन अत्याधुनिक आयातित मशीनों की खरीद कर रहा है और चुने गए अस्पतालों में इन्हें स्थापित करने की कार्रवाई कर रहा है। इन मशीनों को चार साल की वारंटी के साथ स्थापित किया जा रहा है ताकि डायलिसिस केंद्रों पर इनका निर्बाध संचालन सुनिश्चित किया जा सके।

80 वर्षीय महिला की दूरबीन द्वारा सफल स्पाईन सर्जरी

उदयपुर (वि.)। पारस जे. के. हॉस्पिटल में चिकित्सकों ने 80 वर्षीय महिला की दूरबीन विधि से सफल स्पाईन सर्जरी कर दर्द से निजात दिलाई है। हॉस्पिटल के डायरेक्टर विश्वजीत कुमार ने बताया कि पाली निवासी श्रीमती निहालकंवर लाखावत छह माह से तेज कमर दर्द से परेशान थी। गत दिनों महिला को पारस जे.के. हॉस्पिटल के न्यूरो सर्जन डॉ. अजीतसिंह को दिखाया गया। जांच में रीढ़ की हड्डी मुड़ी हुई मिली। साथ ही पैरों की ओर जाने वाली नस भी दब गई है। इस पर मरीज की दूरबीन द्वारा सर्जरी कर मरीज को दर्द से मुक्ति दी। मरीज स्वस्थ है।

मैकडॉवेल्स नं. 1 एलईपी लॉन्च

उदयपुर (वि.)। उदयपुर। मैकडॉवेल्स नं. 1 ने नया लिमिटेड एडिशन पैक (एलईपी) लॉन्च किया है। अमरप्रीत सिंह आनंद, एक्ज़िक्यूटिव वाईस प्रेसिडेंट एवं पोर्टफोलियो हेड, मार्केटिंग डियाजियो इंडिया ने कहा कि यह नया नं. 1 पैक यारी के रंग खूबसूरत गोल्डन एवं सिल्वर पैकेजिंग में पीले, नीले और गुलाबी स्प्लैश में आता है और इस अवसर को प्रतिबिंबित करता है। दोस्ती की कोई सीमा नहीं होती है और यह आकर्षक पैक आपको अपने यारों के साथ बेहतरीन मुलाकात का अवसर एवं शानदार अनुभव प्रदान करेगा।

स्वावलंबन संकल्प अभियान के 16 वेबिनार पूरे

उदयपुर (वि.)। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) के संवर्द्धन, वित्तपोषण और विकास में संलग्न प्रमुख वित्तीय संस्था, भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) ने दलित इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (डीआईसीसीआई) के साथ साझेदारी में 'स्वावलंबन संकल्प - मेगा अभियान' के 16 वेबिनार एपिसोड को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है।

यह अभियान, महिलाओं और अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के वंचित और असेवित वर्गों के सशक्तीकरण के लिए भारत सरकार के प्रमुख कार्यक्रम, स्टैंड-अप इंडिया (एसयूआई) योजना को बढ़ावा देने के लिए जागरूकत के विस्तार और व्यवसाय अवसर प्रदान करने की एक श्रृंखला है। इसके तहत अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के आकांक्षी उद्यमियों को वेबिनार के माध्यम से व्यवसाय के बारे में व्यावहारिक समझ प्रदान कर उन्हें रोजगार ढूढ़ने की बजाय रोजगार प्रदाता बनने का अवसर दिया जाता है।

सस्टेनेबल भविष्य के लिए लौटाएं कार्ल्सबर्ग की ग्लास बॉटल्स

उदयपुर (वि.)। अनुपचारित (अनट्रीटेड) अपशिष्ट की दैनिक आमद के चलते भारत पर बोझ काफी बढ़ चुका है और लैंडफिल्स यानी कचरा भराव भूमि तेजी से कम होती जा रही है। लगभग 3.1 मिलियन टन अपशिष्ट इकट्ठा होने वाले कचरे का 70 प्रतिशत से अधिक है, अनुपचारित पड़ा रहता है। यह एक चिंताजनक आंकड़ा है। फिलहाल, देश में घरेलू और व्यावसायिक अपशिष्ट के प्राथमिक प्रवाहों में कांच भी एक है। फिर से इस्तेमाल हो सकने वाली पैकेजिंग पर्यावरणीय दुष्प्रभावों को कम करने के लिए एक बढ़िया विकल्प है। अभी जिन कारकों पर ध्यान देने की जरूरत है उनमें से एक है उपभोक्ता पैकेजिंग में ग्लास का उपयोग और पर्यावरण पर इसके असर।

जलवायु प्रभाव को सीमित करने की आवश्यकता

उदयपुर (वि.)। जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को सीमित करने के लिए स्थानीय स्तर पर अनूकुलन के प्रयास किए जाएं तो इससे होने वाले दुष्प्रभावों को कम किया जा सकता है। अलर्ट संस्थान द्वारा वागड़ा जलग्रहण क्षेत्र में नाबार्ड ए.एफबी. के सहयोग से संचालित जलग्रहण विकास कार्यक्रम के तहत ये विचार उभर कर आये।

अलर्ट संस्थान के अध्यक्ष जितेन्द्र मेहता ने कहा कि अब सौर ऊर्जा, बूंद-बूंद सिंचाई एवं कृषि के उन्नत तरीकों को अपनाकर उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ आय संवर्धन भी करना होगा। राजेन्द्र शर्मा ने जल संकट को सबसे बड़ी समस्या बताते वर्षा जल को विभिन्न तरीकों से रोककर कृषि में उपयोग करने तथा किसानों को नवीन तकनीकों की जानकारी दी। मनीष शर्मा ने जैविक कृषि तथा आय-संवर्धन के उपाय तथा बी के गुप्ता ने पारंपरिक जल-संरक्षण को पुनर्जीवित करने पर बल दिया। बाद में बछार स्थित सोलर लिफ्ट सिंचाई प्रणाली एवं एनीकट का अवलोकन किया गया। शैक्षणिक भ्रमण में अलर्ट संस्थान की जिला समन्वयक प्रतीक्षा मेहता, दामिनी शर्मा, क्षेत्र समन्वयक मकनाराम परमार सहित 30 किसानों ने भाग लिया।

इसी क्रम में अलर्ट संस्थान द्वारा अवाणी ग्राम में जलग्रहण विकास कार्यक्रम के तहत एग्रीकल्चर इंश्योरेंस कम्पनी ऑफ इंडिया के अनिल कोठारी ने किसानों को कहा कि बहुत कम प्रीमियम पर फसल के नुकसान की भरपाई की जा सकती है। मौसम के प्रतिकूल प्रभाव के कारण उत्पादन कम होने पर भी उसकी भरपाई बीमा से की जा सकती है। अलर्ट संस्थान के अध्यक्ष जितेन्द्र मेहता किसानों को नवीन तकनीक का उपयोग करते हुए सरकार द्वारा उपलब्ध कराई गई बीमा योजनाओं का लाभ उठाने को प्रेरित किया। शिविर में 30 किसानों के साथ अवाणी ग्राम के वार्डपंच प्रकाश गमेती, अलर्ट संस्थान की प्रतीक्षा मेहता एवं उषा गमेती ने भाग लिया।

महिलाएं सशक्त, सशक्तीकरण नहीं

उदयपुर (वि.)। रोटरी इंटरनेशनल के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष शेखर मेहता ने कहा कि मौजूदा दौर में हमें महिला सशक्तीकरण की जरूरत नहीं हैं क्योंकि वे खुद सशक्त हैं। मैं जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं को बुलंदियां छूते हुए, एम्पावर्ड होते हुए और लीडरशिप की पॉजिशन में देखना चहता हूं। वे अपनी काबिलियत साबित करें। अपना हक जताएं और जरूरत हो तो छीनलें। ये विचार उन्होंने यहां रोटरी क्लब ऑफ उदयपुर मीरा की ओर से आयोजित 'संगिनी-कॉन्फेंस फ़ॉर वीमेन' के उद्घाटन समारोह में व्यक्त किए। डिस्ट्रिक्ट गवर्नर डॉ. राजेश अग्रवाल ने कहा कि इस तरह की कॉन्फ्रेंस के माध्यम से महिलाओं को खुद को जानने, अभिव्यक्त करने और नए अवसर बनाने का मौका मिलता है।

प्रीतम गोस्वामी ने पॉवर प्वाइंट प्रजेंटेशन देकर कामकाजी जीवन के साथ ही पारिवारिक जीवन को बैलेंस करने में महिलाओं की भूमिका को उजागर किया। डॉ. अनुराधा टोते ने स्माइल, हैलो सहित कई साधारण बातों के साथ बातचीत की शुरूआत करने के टिप्स दिये। इस अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट योगदान देने वाली राजस्थान और गुजरात की 13 विशिष्ट प्रतिभाओं का सम्मान किया गया।

दूसरे दिन डॉ. राजेश अग्रवाल ने डायवर्सिटी को रोटरी क्लब की ब्यूटी बताते महिला शक्ति को अपार्च्यूनिटी से नहीं भागकर अपने को सुरपस्टार्स मानते सेवा-कार्यों की जानकारी दी। अंतर्राष्ट्रीय इम्पीरिकल कोच आसमानी सुर्वे ने परिस्थितियों से डटकर मुकाबला करने की प्रेरणा दी। प्रवक्ता सुषमा कुमावत, चेयरमैन मधु सरीन, आयोजन सचिव प्रीति सोगाणी, अध्यक्षा विजयलक्ष्मी गलुण्डिया, सचिव संगीता मूंदरा ने रोटरी क्लब ऑफ उदयपुर मीरा क्लब को सेवा-कार्य में दुनिया का सबसे बड़ा महिला संगठन बताया।

भंवर म्हानैं खेलण.....

(पृष्ठ एक का शेष)

इसलिए वह घड़ी, हर घड़ी, पल-प्रतिपल घर-आंगन में ऊपर-नीचे चढ़ती-उतरती अपने प्राणप्यारे की बाट जोहती है। प्रियतम के नहीं आने पर वह इस आशा से गाना प्रारंभ कर देती है कि जहां होंगे, उसका गीत सुनकर घर चले आयेंगे और उसे गणगौर खेलने जाने की स्वीकृति प्रदान करेंगे। गाती रहती है-

म्हांने दोनी हो मेवाड़ा राजा सीख
म्हैं तो रमवा जावूं हो बादल म्हैल में जी।
म्हारी सगरी सहेल्यां जोवे वाट
म्हैं तो जावूं जी रमवा मोती महल में जी रा..
म्हैं तो ऊंची चढ़ूं ने नीची उतरूं
म्हैं तो जोवूं हो आलीजा आपरी बाट..
म्हैं तो जावूं जी रमवा हरिया बाग में जी रा..

गणगौर के अवसर पर स्त्रियां घूमर नृत्य करती हैं। यह घूमर उदयपुर तथा बूंदी की बड़ी कलापूर्ण होती है। घूमर नृत्य में कई गीत प्रचलित हैं जिनमें से कुछ प्रतिनिधि प्रसिद्ध गीतों के बोल इस प्रकार हैं-

(1)

लालर लेदो रे नोखीला म्हारो जीव तरसे लालर लेदो रे।
रखड़ी बांधूं तो म्हारे कालो डोरो आठी को
बिंदली बिना म्हारो जीव तरसे लालर लेदो रे।
लेरियो ओढ़ूं तो म्हारो मन नहीं भावे
सालूड़ा बिना म्हारो जीव तरसे लालर लेदो रे.....

(2)

सागर पाणी कैसे जाऊंसा नजर लग जाय।
म्हारी पतली कमर ढोला लुल्-लुल् जाय।
म्हारी हिंगूली री टींकी ढोला फीकी पड़ जाय।
म्हारी सोसन्या साड़ी रो ढोला रंग उड़ जाय।

(3)

म्हारी घूमर छै नखराली ए मां
गौरी घूमर रमवा म्हैं जास्यूं।
म्हारी सात सहेल्यां रो झूमको ए मां
म्हाने रमता ने लाडूला लादा ए मां
म्हारी रणक झणक पायल बाजे ए मां
म्हारे आलीजा री बोली मोत्यां तोली ए मां

जयपुर तथा बीकानेर में गणगौर की सवारी बड़ी धूमधाम से निकलती रही है। एक समय था जब इस अवसर पर ऊंटों और घोड़ों की दौड़ भी होती थी। 'गणगौर्यां ने ही घोड़ा नहीं दौड़ेल़ा तो कद दौड़ेल़ा' कहावत इस बात का प्रमाण है।

नाथद्वारे की गणगौर के सम्बन्ध में यह ठीक ही कहा गया है- राजस्थान भर में नाथद्वारे की गणगौर की बड़ी प्रसिद्धि रही है। सात दिन तक गणगौर की सवारी पूरे राजसी ठाटबाट से निकलती थी।

सातों दिनों तक सात रंगों में सवारी का प्रबन्ध होता। ईसर और गणगौर को नित्य नये रंग की पोशाकें धारण कराई जाती। जुलूस वालों के भी उसी रंग के वस्त्र होते। और तो और हाथी की झूलें तक उसी रंग की होतीं।

शहर में जगह-जगह वस्त्र रंगने के लिए रंगरेजों का प्रबन्ध कर दिया जाता। नगरवासियों तथा बाहर से आने आने वाले दर्शकों के वस्त्र, पगड़ी, बंधा आदि रंगरेज उसी समय निशुल्क रंग देते। नीली, पीली, लाल, गुलाबी, केशरिया, कसूमल आदि अलग ही रंग में रंगे उमड़ते जनसमूह का दृश्य बड़ा मुग्धकारी होता।

काठ की बनी बड़े कद की ईसर और गणगौर की मूर्तियों की सवारी, उन्हें विविध प्रकार के सोने-चांदी के आभूषणों तथा तड़कीले-भड़कीले कीमती वस्त्र पहनाकर अब भी निकाली जाती है और उनकी आपसी होड़ तथा दौड़ में अब भी प्रथम, द्वितीय आने वाले को पुरस्कार दिया जाता है।

ऐसे ठाटबाट और हंसीखुशी के समय कुछ स्त्रियां, जिनके पति परदेश से नहीं आ पाते हैं, गणगौर का त्यौहार तो मनाती हैं परन्तु उनमें उतना उल्लास, आनन्द और उत्साह नहीं दिखाई देता। वे शाम के समय बागबगीचों अथवा सरोवर के किनारे घूमर नृत्य-गीतों का आनन्द तो लेती हैं वहीं प्रिय विरह में अपनी साड़ी का पल्ला झाळती हुई अपने प्रियतम को घर बुलाने का हेला गीत गाती हैं। यथा-

अनोखा कुंवरजी हो सायबा झालो देऊं घर आव।

परन्तु जब प्रियतम आने में असमर्थ दिखाई देता है तो उसकी विरह वेदना तीव्र से तीव्रतर हो जाती है। उस समय उसकी जो मनोदशा-व्यथा होती है उसका चित्रण अन्यत्र देखने को कम मिलता है-

भंवर घड़ाजोजी हजारी ढोला भंवर घड़ाजोजी
म्हारी रखड़ी ऊपर भरम करे वीआया रीजोजी

अर्थात्- मेरे हजारों में से एक प्रियतम! तुम किसी-न-किसी प्रकार अवश्य आ जाओ। लोग मेरी रखड़ी पर कई प्रकार के भ्रम पैदा करते हैं। गीत ही गीत में पति जब आज की बजाय कल आने की बात कहता है तब उसका उत्तर होता है-

म्हैं तो मरूं कटारी खाय हजारी ढोला कल मत आजोजी।
म्हारी रात रसोई ताजा भोजन सीला मत करजो जी।
म्हारो रतन परिंडा रो ठंडो पाणी सीलो मत करजोजी।
म्हारो छपर पलंग मिसर रा तकिया सूना मत करजोजी।

नाथ! तुम कल आकर क्या करोगे? कल तो मैं कटार भौंक कर स्वयं ही अपने प्राणपंखेरू उड़ादूंगी। मेरे रत्नों से जड़े परेंडे का ठंडा पानी भी गरम हो जाएगा। कहीं मेरे छप्पर पिलंग और मिश्र के बने तकिये तुम्हारी प्रतीक्षा में सूने न पड़े रह जायें। तुम किसी-न-किसी बहाने अवश्य आ जाओ।

- विशाल राजस्थान, 10 मार्च 1960 से साभार

हत्या के प्रसंग.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

शवयात्रा आयड़ पुलिया के पास पहुंची। वहीं पुलिया के चबूतरे पर अर्थी रखी गई। इतने में पास ही में निवास कर रहे यतिजी को किसी ने राजकुमार सरदारसिंह के नहीं रहने की सूचना दी। यतिजी को इस पर तनिक भी विश्वास नहीं हुआ कारण कि सुबह तो राजकुमार उनके पास आये थे।

यह यति चन्द्रसेन था जो बड़ा पहुंचा हुआ तांत्रिक था। इसके चमत्कार के कई किस्से जनजीवन में आज भी सुनने को मिलते हैं। राजकुमार भी इनसे कई प्रकार की तंत्र विद्या में पारंगत हो गये थे।

यहां तक कि उन्होंने स्वयमेव उड़ान भरने की कला में महारत हासिल कर ली थी। दौड़े-दौड़े यतिजी वहां आये। कुंवर को तंत्रबल से जीवित किया। दोनों कुछ देर चौपड़ पासा खेले। उसके बाद यतिजी बोले- 'अब अर्थीवर्थी छोड़ो और पूर्ववत हो जाओ।' इस पर राजकुमार बोले- 'नहीं जिस दुर्गति से मैं मृत्यु को प्राप्त हुआ, अब जीना व्यर्थ है'। इस पर यति ने पानी के छींटे दिये और कुंवर को मृत किया। आयड़ की महासतियांजी में राजकुमार का दाह संस्कार किया गया। कहते हैं इस घटना से राजपुरोहित दंपति का मन ग्लानि से भर गया और जीवित रहने की बजाय दोनों ही कुंवर की चिता में कूद पड़े। उधर जब राजकुमार सरदारसिंह के निधन के समाचार बीकानेर की रानी विचित्रकुंवर को मिले तो वह अपने हाथ में सत का नारियल लेकर अग्नि में प्रवेश हो गई।

दिनांक 6 जनवरी 2002 को रात्रि में उदयपुर की मंडी की नाल में जोगपोल स्थित दाताभवन में महंत मिट्ठालालजी चित्तौड़ा के निवास पर पहली बार गादी पर सगसजी बावजी सरदारसिंहजी के दर्शन किये। गत 40 वर्षों से, विद्यार्थीकाल से चित्तौड़ाजी में इन बावजी के भाव आ रहे हैं। इस गादी पर बावजी ने मुझे ऊपर वर्णित समग्र जानकारी से परिचित कराया और कहा, 'जिनकी मृत्यु हत्या-प्रसंग में होती है वे व्यंतरवासी देव बनते हैं। उनकी रूह भटकती रहती है किन्तु सम्मानपूर्ण स्थान (आसन) मिलने पर वे शान्त हो जाते हैं और उनकी आत्मा मानव कल्याण में लग जाती है।'

गुलाबबाग बावड़ी के सगस अर्जुनसिंहजी :

महाराणा राजसिंह के जीवनकाल में तीसरी हत्या उनके साले अर्जुनसिंह की की गई। ये मारवाड़ के थे और गणगौर पर सवारी देखने उदयपुर आये हुए थे। इनकी बहिन रतनकुंवर थी जो राणाजी से विवाहित थी। ये करीब 35 वर्ष के थे। जब सर्वऋतु विलास में घूम रहे थे कि सामने आता एक इत्र बेचने वाला दिखाई दिया। वह निराश भाव लिये था। अर्जुनसिंह से बोला- 'महलों में गया किन्तु निराश ही लौटा। किसी ने मेरा इत्र नहीं लिया। लगा यहां वो महाराणा या तो इत्र के शौकीन नहीं हैं या अच्छे इत्र की उन्हें पहचान नहीं है।' अर्जुनसिंह को यह बात अखरी। उसने इसे मेवाड़ का अपमान समझा। मन ही मन सोचा कि अच्छा यही हो, इसके पास जितना भी इत्र है, सबका सब खरीद लिया जाय ताकि ये समझे कि जो इत्र उसके पास है वैसा तो यहां के घोड़े पसंद करते हैं।

यह सोच अर्जुनसिंह ने उसे इत्र दिखाने को कहा। इत्रवाला इत्र दिखाता जाता और अर्जुनसिंह उसे अपने घोड़े की अयाल में उड़ेलने को कहते। ऐसा करते-करते अर्जुनसिंह ने सारा इत्र खरीदकर, मुंह मांगी कीमत देकर मेवाड़ के गौरव की रक्षा की किन्तु मुंह लगे लोगों ने इसी बात को विपरीत गति-मति से महाराणा के सामने प्रस्तुत करते हुए कहा कि अर्जुनसिंह कौन होते हैं जिन्होंने इस तरह का सौदा कर मेवाड़ की इज्जत एवं आबरू मिट्टी में मिला दी। क्या मेवाड़नाथ का खजाना खाली है जो उन्होंने अपने पैसे से इत्र खरीदकर मेवाड़ को नीचा दिखाया।

महाराणा को यह बात बुरी तरह कचोट गई। पीछोला झील में गणगौर के दिन जब नाव की सवारी निकली तो बीच पानी में ही शराब के साथ जहर देकर महाराणा ने उनका काम तमाम कर दिया। वे चलती नाव में ही लुढ़क गये और उनके प्राण पखेरू उड़ गये। ये ही अर्जुनसिंह आगे जाकर गुलाबबाग की सुप्रसिद्ध बावड़ी के निकट प्रकट हुए और सगसजी बने।

इस प्रकार महाराणा राजसिंह पर उपर्युक्त तीनों हत्याओं का पाप चढ़ा फलत: ज्योतिषियों के कहने पर इन हत्याओं के प्रायश्चित स्वरूप राजसमंद झील का निर्माण कराया, ब्रह्मभोज दिया तथा गोदान कराया।

सगस सगतसिंहजी :

महाराणा राजसिंह के मझोले पुत्र सगतसिंह की हत्या बदले की भावना से की गई। अर्जुनसिंह के पुत्रों ने यह हत्या घाणेराव सादड़ी में बर्छी के वार से की। वे उदयपुर आये और कुंवर सगतसिंह को बहला फुसला कर ले गये। कुंवर यह समझा कि मामेरे उन्हें लाड़-प्यार से ले जाया जा रहा है। सादड़ी में जहां उनकी हत्या की गई वहां छतरी बनी हुई है। बीकानेर में विचित्रकुंवर की स्मृति में भी छतरी बनी हुई है। उदयपुर में यतिजी की याद में आयड़ में और महासतियांजी में सुलतानसिंह, सगतसिंह और सरदारसिंह की छतरियां उनकी स्मृति शेष को जीवंत किये हुए हैं।

सगस बख्तावरसिंहजी :

कंवरपदा स्कूल के सगसजी भीलवाड़ा जिले के कारोई ठिकाने के तृतीय वंशधर महाराज बख्तावरसिंह हैं। कारोई के महाराज शिवदानसिंहजी (75) ने बताया कि पूर्व में कंवरपदा स्कूल कंवरपदा की हवेली के नाम से प्रसिद्ध था। यह हवेली कारोई ठिकाने की थी। महाराणा भीमसिंह का शासन था। कुछ सरदारों ने मिलकर महाराणा का काम तमाम करने का षड़यंत्र रचा।

षड़यंत्र के तहत महाराणा के साथ राजमहल में चेब्या (पानी के हौज) में खेलना था। इसकी भनक बख्तावरसिंह को लग गई। उन्होंने महाराणा को सारा भेद बता दिया। अपने षड़यंत्र में विफल हुए षड़यंत्रकारियों को जब इसका पता चला तो वे बख्तावरसिंह के पीछे पड़ गये। मौके की तलाश करते रहे। एक दिन सांध्या को कंवरपदा हवेली के गोखड़े में बैठे बख्तावरसिंह नितनेम कर रहे थे कि पीछे से कटार घोंपकर उनकी हत्या कर दी गई। शिवदानसिंहजी ने बताया कि वर्षों तक उस गोखड़े की फर्श और दीवाल पर लहू के छींटे यथावत रहे किन्तु बाद में वह जगह पेंट करवा दी गई।

करजाली हाऊस के सगस भैरूसिंहजी :

करजाली हाऊस के सगसजी भैरूसिंह हुए। वे बाघसिंह के पुत्र थे। करजाली जागीर के वंशज निर्भयसिंहजी राणावत (76) ने बताया कि भैरूसिंह को उन्हीं के साले ने कटार घोंपकर परलोक गामी बनाया। कटार घोंपने के बाद उन्हें खाट से कसकर बांध दिया। भैरूसिंह उस हालत में खाट सहित खड़े हो गये। उन्होंने अपनी कमर से कटार निकाली और मारक के पीछे दौड़े किन्तु नाल में खाट फंसने से खड़े-खड़े ही वे मृत्यु को प्राप्त हुए। इस घटना के बाद राजपूत परिवारों में छोटी खाट का प्रचलन शुरू हो गया।

अन्य सगसजी :

इसी प्रकार वारियों की घाटी वाले सगसजी रणसिंह, रामदास कोलोनीवाले भीमसिंह, मोतीमगरी के मोती महल स्थित बहादुरसिंह, कोठारियों की गली वाले धनसिंह, सुखरामसिंह, राजमहलों के सुलतानसिंह, पीछोलीवाले सुलतानसिंह, महासतियांजी स्थित भैरूसिंह, सरदारसिंह, घंटाघर स्थित जगतसिंह के अलावा उदियापोल, भटियानी चोहट्टा, गुरू गोविन्दसिंह स्कूल, कुम्हारों का भट्टा, जगदीश चौक स्कूल, सहीवालों की सेहरी, आयड़ पुलिया, खेमणघाटी, सलूम्बर की हवेली, शिवरती हवेली, बबेलों की सेहरी, मदनपोल, बागोर की हवेली आदि स्थानों पर भी सगसजी के मान्य स्थानाक हैं।

PIMS हॉस्पिटल, उमरड़ा

हमारे सुपरस्पेशियलिस्ट रखें हर पल आपके स्वास्थ्य का खयाल...

नशा मुक्ति एवं परामर्श केन्द्र

PIMS हॉस्पिटल, उमरड़ा

यहाँ पर हर प्रकार का नशा जैसे–

शराब, गांजा, स्मैक, चरस, गोली, भांग, अफीम,स्मैक, ब्राउन शुगर, हेरोइन तम्बाकू, सिगरेट, बीड़ी, कैप्सूल, सीरप, इंजेक्शन, पेट्रोल / डीजल / केरोसीन, फ्लूड, मोबाईल/ इन्टरनेट एडिक्शन आदि का उपचार व परामर्श दिया जाता है।

नशा एक बुरी लत है तथा यह एक Progressive Disease है।

परिवार में किसी को भी उपरोक्त में से किसी भी प्रकार का नशा होने पर उपचार के लिए PIMS हॉस्पिटल, उमरड़ा के डी–एडिक्शन सेंटर में तुरंत सम्पर्क करें

नशे की लत के सामान्य लक्षण

1.अकेला रहना या परिवार के सदस्यों से कम या नहीं मिलना–झुलना।
2.व्यवहार में बदलाव आना।
3.मनोदशा (Mood) में परिवर्तन आना।
4.पारिवारिक, व्यवसाय एवं सामाजिक जिम्मेदारियों की अपेक्षा।
5.चोरी करना, जोखिम उठाने का व्यवहार
6.दैनिक कार्यकलाप व्यवसाय, पढ़ाई आदि की उपक्षा
7.नींद की कमी या नींद का ज्यादा आना
8.कब्ज, पेट दर्द या स्ववेम उवजपवद होना
9.शरीर में दर्द या खिचाव होना।

व्यसन मुक्ति विशेषज्ञ

डॉ. बी. के. पुष्प
मनोचिकित्सक

इंद्रपाल सालवी
मनोवैज्ञानिक

डॉ. सुदीप चौधरी
कार्डियोथोरेसिक व वेस्कुलर सर्जन

डॉ. सुभाब्रता दास
सर्जिकल ऑन्कोलॉजिस्ट (कैंसर सर्जन)

डॉ. अनुराग पटेरिया
न्यूरो एवं स्पाईन सर्जन

डॉ. कौशल कुमार गुप्ता
यूरोलोजिस्ट

डॉ. अतुल मिश्रा
पीडियाट्रिक सर्जन

डॉ. महेश जैन
इन्टरवेंशनल कार्डियोलाजिस्ट

डॉ. करन कुमार
हेपेटोलॉजिस्ट

डॉ. राजेश खोईवाल
न्यूरोलॉजिस्ट

डॉ. एम. पी. अग्रवाल
प्लास्टिक एवं कॉस्मेटिक सर्जन

PATIENT SAFETY & QUALITY OF CARE NABH PRE ACCREDITED

उपलब्ध सेवाएं

- कार्डियक केयर सेन्टर
- न्यूरो सर्जरी
- नेफ्रोलोजी
- जनरल मेडिसिन
- टी.बी. चेस्ट एवं श्वास रोग
- प्रसूति एवं स्त्री रोग
- हड्डी एवं जोड़ रोग
- कैंसर सर्जरी
- यूरोलॉजी
- गेस्ट्रोएंटरोलॉजी
- पीड्रियाट्रिक सर्जरी
- मनोरोग चिकित्सा
- नेत्र रोग
- पेन मैनेजमेन्ट क्लिनिक
- न्यूरोलॉजी
- प्लास्टिक एवं बर्न सर्जरी
- जनरल एवं लेप्रोस्कॉपिक सर्जरी
- नाक, कान, गला रोग
- बाल चिकित्सा
- त्वचा एवं चर्म रोग
- दंत चिकित्सा

800 बेडेड मल्टी सुपर स्पेशिलिटी हॉस्पिटल
70 बेडेड आईसीयू
16 ऑपरेशन थियेटर
18 बेडेड डायलिसिस युनिट

24/7 EMERGENCY SERVICE आपातकालीन सुविधाएँ उपलब्ध

0294-3510000

14.50 लाख से अधिक मरीजों का सफल उपचार | 800 बेडेड हॉस्पीटल | 70 बेडेड आई.सी.यू. | 18 बेडेड डायलिसिस युनिट | 16 ऑपरेशन थियेटर

आमजन हेतु उपलब्ध सरकारी सुविधाएं

- आयुष्मान भारत महात्मा गांधी राजस्थान स्वास्थ्य बीमा योजना
- ESI राज्य कर्मचारी बीमा के अन्तर्गत उपचार
- राजस्थान एड्स कन्ट्रोल सोसायटी
- परिवार नियोजन एवं जननी सुरक्षा योजना
- डॉट्स टी.बी. एवं क्षय रोग

रोगियों के लिए नि:शुल्क बस व एम्बुलेंस सुविधा उपलब्ध है– सम्पर्क करें : 9587890137

डायग्नोस्टिक विश्वस्तरीय मशीनों द्वारा जांच व निदान, MRI (1.5 T), CT-Scan (128 Slice), CD4 Count की सुविधा उपलब्ध, अल्ट्रासाउण्ड, इको कार्डियोग्राम, एलर्जी टेस्ट (Phadia 100), Hb-Vario (HPCL), ADVIAXP (CLIA), TB-PCR (Gene Xpert),NABL द्वारा मान्यता प्राप्त VIROLOGY LAB

▸मोड्यूलर ऑपरेशन थियेटर ▸आई.सी.सी.यू. ▸आई.सी.यू. ▸पी.आई.सी.यू. ▸एन.आई.सी.यू. ▸कोविड आई.सी.यू. ▸आइसोलेशन वार्ड ▸बर्न आई.सी.यू. ▸ब्लड बैंक

साई तिरूपति विश्वविद्यालय, उमरड़ा, उदयपुर

अम्बुआ रोड़, उमरड़ा, उदयपुर (राज.) 313015 Phone: 0294-3510000, Mob. 8696440666

Email: info@pacificmedicalsciences.ac.in
Web: www.pacificmedicalsciences.ac.in

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर – 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311–ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294–2429291, मोबाइल – 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।